www.ghoonghatkibagawat | www.ghoonghatkibagawat | ghoonghatkibagawat37@gmail.com

घूँघट की बगावत

UP/HIN/1999/1282

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित

हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

वर्ष : 24 अंक : 12 | गोरखपुर, 15 सितम्बर 2024 रविवार | पृष्ठ : 8 | मूल्य : 2

प्रकृति के पास हर कर्म का परिणाम

प्रकृति के विधान में क्षमा का प्रावधान नहीं है। प्रकृति का विधान अपने अनुरूप चलता है। यह स्वयं से संचालित है, किसी अन्य के द्वारा नहीं। जो इसके विधान का पालन करता है, उसका लाभ होता है और जो इसका उल्लंघन करता है, दंड का भागीदार होता है। जैसे खेत में बीज बोया जाता है और उसके अनुरूप फसल मिलती है ठीक वैसे ही प्रकृति के खेत में कर्म का बीजारोपण होता है और भाग्य व प्रारब्ध के रूप में उसकी ही फसल उगती है।

सत्कर्मों के बीज पुण्य के रूप में पुष्पित होते हैं और दुष्कर्मों के बीज पाप के रूप में। यह अटल विधान है और ऐसा होता अवश्य है। प्रकृति में हर कर्म का परिणाम होता है। यहां पर बबूल का बीज डालकर आम की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। प्रकृति ने अपनी सृष्टि के संचालन के लिए विशेष नियम-विधान की व्यवस्था की है। जो इस विधान को जानते-समझते हैं, वे कभी भी भूल नहीं करते। आसक्तिवश, मोहवश, कामनावश और क्रोधवश किया गया कर्म हमें कर्म बंधन में जकड़ता है और इससे उपजे परिणाम का सामना करना पड़ता है। किसी कर्म का परिणाम कब आएगा और बुरे परिणाम से कैसे निजात पाई जा सकती है, इसका भी एक विशिष्ट विधान है। जो इस विधान से परिचित होते हैं, वे किसी कारणवश हुई गलतियों से छुटकारा पाने का प्रयास करते हैं। चाकू के गलत इस्तेमाल से हाथ भी कट सकता है और यदि हाथ कट जाता है तो उसकी पीड़ा को भी डोलना ही पड़ेगा। हाथ न कटे इसलिए चाकू का इस्तेमाल सावधानी से करना चाहिए। वैसे ही सभी कर्मों के साथ सजग और सचेष्ट रहकर ही बर्ताव करना चाहिए। फिर भी यदि त्रुटि हो जाती है, तो प्रकृति के दंड से बचने के बजाय स्वेच्छा से दंड को वरण कर लेना चाहिए। त्रुटियों के लिए किए गए स्वेच्छा से दंड वरण करने को तपस्या कहा जाता है। भोग और तप ही ऐसे दो माध्यम हैं, जिनसे प्रारब्ध को काटा या कम किया जाता है। किसी क्षण में किए गए एक छोटे से दुष्कर्म का परिणाम भी कभी-कभी भीषण परिणाम लेकर आता है। इसलिए जीवन में सदा सत्कर्मों के बीज डालना चाहिए, ताकि उनसे पुण्य के फल उगें और उनसे जीवन सुखी-संपन्न हो जाए। पता नहीं किस दुष्कर्म का परिणाम कितना घातक होगा और हमें उसकी कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी। इसलिए प्रकृति के दंड-विधान से बचने के लिए जीवन में सतत सत्कर्म करते रहना चाहिए।

प्रकृति ने अपनी सृष्टि के संचालन के लिए विशेष नियम-विधान की व्यवस्था की है। जो इस विधान को जानते-समझते हैं, वे कभी भी भूल नहीं करते। आसक्तिवश, मोहवश, कामनावश और क्रोधवश किया गया कर्म हमें कर्म बंधन में जकड़ता है और इससे उपजे परिणाम का सामना करना पड़ता है।

प्रफुल्ल सिंह
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

पश्चिम की बारिश का असर, गंगा-यमुना फिर उफान पर

प्रयागराज। पश्चिमी यूपी और पहाड़ पर हुई बारिश का असर संगम नगरी में दिख रहा है। यहां गंगा और यमुना का जलस्तर 24 घंटे में करीब तीन मीटर बढ़ गया है। इससे घाट पर बसे पंडे सामान समेटकर सुरक्षित स्थानों की ओर पहुंच गए। श्रद्धालुओं को गहरे पानी में जाने से रोका जा रहा है। जलस्तर बढ़ने से महाकुंभ की तैयारी भी प्रभावित हो रही है। तीन-चार दिनों से दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, पश्चिमी यूपी और उत्तराखंड में बारिश हो रही है। बारिश का पानी गंगा और यमुना के जरिये प्रयागराज पहुंचा तो नदियों का जलस्तर अचानक बढ़ गया। इस साल गंगाजी ने दूसरी बार श्री बड़े हनुमान मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश किया। सुबह आठ बजे नैनी में यमुना का जलस्तर 79.35 मीटर था, जो रात आठ बजे 1.93 मीटर बढ़कर 81.28 मीटर हो गया है। ऐसे ही छतनाग घाट पर सुबह आठ बजे गंगा का जलस्तर 78.10 मीटर था। रात आठ बजे वहां का जलस्तर 1.97 मीटर बढ़कर 80.07 मीटर हो गया है। इसके सापेक्ष फाफामऊ में

12 घंटे में 39 सेंटीमीटर ही बढ़ोतरी हुई है।

सिंचाई विभाग की टीम के अनुसार, यमुना की सहायक नदियों केन और बेतवा का जलस्तर तेजी से बढ़ा है। बढ़ते जलस्तर की लगातार निगरानी हो रही है। आने वाले दिनों में जलस्तर और बढ़ने की संभावना है। शनिवार को सुबह आठ बजे फाफामऊ में गंगा का जलस्तर 80.55 मीटर दर्ज किया गया। छतनाग में 81.19 मीटर रिकॉर्ड किया गया। इसी तरह यमुना के जलस्तर में भी तेजी से वृद्धि हो रही है। नैनी में यमुना का जलस्तर 82.67 मीटर दर्ज किया गया। प्रयागराज में गंगा के खतरे का चेतावनी बिंदु 84.73 मीटर है। फिलहाल दोनों नदियां खतरे के निशान से काफी नीचे बह रही हैं। बार-बार गंगा और यमुना का जलस्तर बढ़ने से महाकुंभ की तैयारी पर असर पड़ रहा है। अगस्त के पहले हफ्ते में गंगा का जलस्तर तेजी से बढ़ा था। सात अगस्त को लेटे हनुमान मंदिर को गंगाजी ने स्नान करवा दिया था। हफ्ते भर बाद जलस्तर कम हुआ। इसके बाद मेला प्राधिकरण ने समतलीकरण का काम शुरू करने की तैयारी बना ली थी। इसी बीच फिर से जलस्तर बढ़ गया। बार-बार जलस्तर बढ़ने से मेला प्राधिकरण की टीम टेंट सिटी बसाने, शिविर लगाने आदि के लिए जमीन के सर्वे का भी काम नहीं कर पा रही है। मेला अधिकारी विजय किरण आनंद ने बताया कि अस्थायी कार्यों के लिए तैयारी पूरी है लेकिन जलस्तर बढ़ने से टीम कुछ नहीं कर पा रही है।

रेगिस्तान में बने बाढ़ के हालात

बाड़मेर, जैसलमेर समेत 28 जिलों में अत्यधिक वर्षा

जयपुर। इस बार के मानसून ने रेगिस्तान में भी बाढ़ ला दी है। सीजन में कोई भी जिला ऐसा नहीं बचा, जहां कम वर्षा हुई है। जल संसाधन विभाग के आंकड़ों के अनुसार करीब 28 जिलों सामान्य से अत्यधिक , 15 में सामान्य से अधिक व 7 जिलों में सामान्य वर्षा रिकॉर्ड की गई है। खास बात यह है कि सामान्य से अत्यधिक वर्षा वाले जिलों में रेगिस्तानी जिले बाड़मेर और जैसलमेर भी शामिल हैं। मौसम विभाग के अनुसार आज राजधानी जयपुर सहित राजस्थान के कुछ इलाकों में हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। इस साल मानसून ने राजस्थान में दशकों के रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। कई बांध जो पिछले तीन दशकों में नहीं भरे थे, अब छलक रहे हैं। गुरुवार तक प्रदेश में 376 बांध पूरी तरह भर चुके हैं और मानसून अब भी सक्रिय है। हालांकि मौसम विभाग का कहना है कि अगले 2 से 3 दिनों में मानसून की सक्रियता घटेगी। बीते 24 घंटे की बात करें तो पश्चिमी राजस्थान में मौसम ज्यादातर शुष्क रहा है। मौसम विज्ञान केंद्र के मुताबिक वेलमार्क लो प्रेशर आज डिप्रेशन बन गया है। यह उत्तर-पूर्वी मध्यप्रदेश के ऊपर है। अगले 24 घंटे में इसके उत्तर-पश्चिम दिशा में पश्चिमी यूपी की तरफ आगे बढ़ने की प्रबल संभावना है। इसके प्रभाव से उत्तर-पूर्वी राजस्थान के कुछ हिस्सों में बारिश हो सकती है।

राजस्थान के जिन जिलों में सामान्य से अत्यधिक वर्षा हुई है, उनमें बाड़मेर और जैसलमेर जैसे रेगिस्तानी जिले भी शामिल हैं। इनके अलावा अजमेर, अलवर, अनूपगढ़, ब्यावर, भरतपुर, बीकानेर, दौसा, डीग, धौलपुर, कुचामन, दूदू, गंगापुर सिटी, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, करौली, केकड़ी, तिजारा, नागौर, सवाई माधोपुर, टोंक, कोटपूतली, बहरोड़, बालोतरा, बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, ग्रामीण, फलौदी , बूंदी और चूरू में भी सामान्य से अत्यधिक वर्षा हुई है।

नारी निर्मात्री शक्ति है सृष्टि की

नारी शक्ति है रचना की
समस्त सृजन की
पुरुषार्थ की सम्पूर्ण
जीवन
मरण बंधन की
नारी शक्ति है प्रेम की
लंका
विध्वंस की
रामायण, महाभारत और शिव
की शक्ति
नारी घर की बिटिया,
घर की लक्ष्मी
घर द्वार जीवन की
अटूट बंधन नारी
नारी निर्मात्री शक्ति है,

सृष्टिकी जीवन धात्री है
धैर्यवान, शान्त, सहिष्णु,
प्रेम
और त्यागी है नारी '

-कुमारी भगवती घोष
(जामताड़ा, झारखण्ड)

पारिवारिक कर्तव्य के रूप में पितृ ऋण से मुक्ति पाने का माध्यम हैं श्राद्ध

श्राद्ध भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म में एक महत्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान है। इसे पितरों (पूर्वजों) की आत्मा की शांति और संतुष्टि के लिए किया जाता है। श्राद्ध संस्कार का उल्लेख प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों जैसे कि वेद, पुराण, और स्मृतियों में किया गया है। इसे एक पारिवारिक कर्तव्य के रूप में देखा जाता है, जो पितृ ऋण से मुक्ति पाने का माध्यम है। ।वैसे तो पिंडदान, तर्पण और श्राद्ध कर्म के लिए भारत में कई जगहें हैं लेकिन फल्गु नदी के तट पर स्थित गया शहर का अपना विशेष महत्व है। वायु पुराण, गरुड़ पुराण और विष्णु पुराण में भी गया शहर का महत्व बताया गया है। इस तीर्थ पर पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है इसलिए गया को मोक्ष की भूमि अर्थात मोक्ष स्थली कहा जाता है। गया शहर में हर साल पितृपक्ष के दौरान एक बड़ा मेला लगता है, जिसे पितृपक्ष का मेला भी कहा जाता है। गया शहर हिंदुओं के साथ साथ बौद्ध धर्म के लिए भी पवित्र स्थल है । धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, सर्वपितृ अमावस्या के दिन गया में पिंडदान करने से 108 कुल और 7 पीढ़ियों का उद्धार हो जाता है और पितरों की आत्मा को शांति मिलती है। साथ ही पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है इसलिए इस स्थान को मोक्ष स्थली कहा जाता है। पुराणों में बताया गया है कि प्राचीन शहर गया में भगवान विष्णु स्वयं पितृदेव के रूप में निवास करते हैं ।गया के बारे में एक पौराणिक कथा के अनुसार गया में गयासुर नामक एक असुर ने कड़ी तपस्या की थी और ब्रह्माजी से वरदान मांगा था। गयासुर ने ब्रह्माजी से वरदान मांगा था कि उसका शरीर पवित्र हो जाए और लोग उसके दर्शन कर पाप मुक्त हो जाएं। इस वरदान के बाद लोगों में भय खत्म हो गया और पाप करने लगे। ।बड़े बड़े पापी भी स्वर्ग पहुंचने लगे। पाप करने के बाद वह गयासुर के दर्शन करते और पाप मुक्त हो जाते थे। ऐसा होने से स्वर्ग और नरक का संतुलन बिगड़ने लगा। इन सबसे बचने के लिए देवतागण गयासुर के पास पहुंचे और यज्ञ के लिए पवित्र स्थान की मांग की। गयासुर ने अपना शरीर ही देवताओं को यज्ञ के लिए दे दिया और कहा कि आप मेरे ऊपर ही यज्ञ करें। जब गयासुर लेटा तो उसका शरीर पांच कोस में फैल गया और यही पांच कोस आगे चलकर गया बन गया। गयासुर के पुण्य प्रभाव से वह स्थान तीर्थ के रूप में जाना गया। गया में पहले विविध नामों से 360 वेदियां थी लेकिन अब केवल 48 ही शेष बची हैं। गया में भगवान विष्णु गदाधर के रूप में विराजमान हैं। गयासुर के विशुद्ध शरीर में ब्रह्मा, जनार्दन, शिव तथा प्रपितामह निवास करते हैं। इसलिए पिंडदान व श्राद्ध कर्म के लिए इस स्थान को उत्तम माना गया है ।हिंदू धर्म में मान्यता है कि हर व्यक्ति पर तीन प्रकार के ऋण होते हैं–देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण। श्राद्ध कर्म पितृ ऋण से मुक्ति का एक महत्वपूर्ण साधन माना जाता है। कोई नहीं बता सकता कि इसमें कितनी सच्चाई है अथवा इसे करने से पितरों की आत्मा को शांति मिलती है और वे मोक्ष की ओर अग्रसर होते हैं,लेकिन हिन्दू धर्म में इसे किये बिना पितरों की मुक्ति नहीं हो सकती ऐसा माना जाता है।अत्रिसंहिता के अनुसार 'पुत्र, भाई, पौत्र (पोता), अथवा दौहित्र यदि पितृकार्य में अर्थात् श्राद्धानुष्ठान में संलग्न रहें तो अवश्य ही परमगति को प्राप्त करते हैं ।पितृ पक्ष में 16 दिनों तक श्राद्ध कर्म होते हैं। ऐसा माना जाता है कि जिस परिवार में किसी सदस्य का देहांत हो चुका है उन्हें मृत्यु के बाद जब तक नया जीवन नहीं मिल जाता तब तक वे सूक्ष्म लोक में वास करते है। ऐसा विश्वास है कि जो व्यक्ति श्राद्ध का आयोजन करता है, उसके परिवार में समृद्धि और शांति बनी रहती है। इसके विपरीत, जो श्राद्ध नहीं करते, उन्हें पितृ दोष का सामना करना पड़ता है, जिसके परिणामस्वरूप परिवार में आर्थिक, मानसिक और शारीरिक समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं ।श्राद्ध करना एक धार्मिक कर्तव्य भी है, जो हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है। यह हमारे पूर्वजों के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक तरीका है, और इससे हमें अपनी सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा और उसे आगे बढ़ाने का अवसर मिलता है। श्राद्ध से जीवित व्यक्ति और उसके पूर्वजों के बीच एक आध्यात्मिक संबंध स्थापित होता है। यह अनुष्ठान उस कड़ी को मजबूत करता है, जो पितरों और उनके वंशजों के बीच होती है। पुराने समय में श्राद्ध को बहुत साधारण तरीके से किया जाता था क्योंकि सबके पास संसाधनों का अभाव होता था लेकिन अपनी सामर्थ्य के अनुसार सभी लोग अपने पितरों का श्राद्ध करते थे।आजकल देखादेखी में श्राद्ध का तरीका बदल गया है ।दिखावा अधिक हो गया है। ऐसा भी देखा गया है कि जीते जी माता पिता की सेवा नहीं की जाती तथा उनको सम्मानित जिन्दगी जीने से वंचित रखा जाता है लेकिन मरने के बाद लोक लाज के लिए तथा दिखावे के लिए लोगों को बुलाकर श्राद्ध किया जाता है ।पुराने समय में श्राद्ध को सामूहिक भोज का आयोजन न करके केवल कुछ ब्राह्मणों को तथा जिसका श्राद्ध होता था उसके साथियों को व दोस्तों को बुलाकर भोजन करवाया जाता था तथा कौओं को भी दूध,चावल व खीर आदि परोसी जाती थी। ।उसके साथियों या दोस्तों को बुलाने के पीछे केवल उसके साथ जुड़ाव व आत्मीयता ही होती थी जिनके शामिल होने से उसके साथ बिताए पलों के स्मरण करके दिवंगत को श्रद्धांजलि हो जाती थी ।उसके साथ बिताए पलों के संस्मरण भी याद के रूप में ताजा हो जाते थे ।उस समय श्राद्ध के दिनों में कौवे बहुत संख्या में घरों के आसपास आकर अपना भोजन ग्रहण करते थे लेकिन आज हम अपने गांवों में देखते हैं कि श्राद्ध के दिनों में भी कौवे बहुत कम नजर आते हैं।

श्राद्ध के लिए एक पवित्र और शांतिपूर्ण स्थान का चयन किया जाता है। इसे किसी भी दिन किया जा सकता है, लेकिन पितृ पक्ष (अश्विन मास के कृष्ण पक्ष) का समय विशेष रूप से शुभ माना जाता है। इस दिन ब्राह्मण या आचार्य को आमंत्रित किया जाता है, जो श्राद्ध की प्रक्रिया को संपन्न करता है ।श्राद्ध का पहला चरण तर्पण होता है। इसमें व्यक्ति अपने पितरों को जल अर्पित करता है। यह प्रक्रिया विशेष मंत्रों के साथ संपन्न होती है। जल में काले तिल, दूध, और कुशा (एक पवित्र घास) मिलाकर पितरों को अर्पित किया जाता है। तर्पण के दौरान, व्यक्ति का मुख दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए, क्योंकि इसे यम की दिशा माना जाता है। तर्पण के बाद पिंडदान किया जाता है। इसमें चावल, जौ, तिल, घी, और शहद के मिश्रण से बने पिंड (गोलाकार आटे के गोले) बनाए जाते हैं और पितरों को अर्पित किए जाते हैं। पिंडदान का उद्देश्य पितरों की भूख को शांत करना और उन्हें तृप्ति प्रदान करना होता है। पिंडदान के समय भी विशेष मंत्रों का उच्चारण किया जाता है ।पिंडदान के बाद ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है। यह भोजन सात्विक,साफ सुथरा और शुद्ध होना चाहिए। भोजन के साथ-साथ ब्राह्मणों को वस्त्र, अनाज, और अन्य आवश्यक वस्तुएं दान की जाती हैं। यह दान पितरों की आत्मा को संतोष और शांति प्रदान करता है। ब्राह्मण भोजन के बाद पितरों की आत्मा की शांति के लिए हवन किया जाता है। इस हवन में घी, तिल, जौ, और समिधा (विशेष प्रकार की लकड़ी) का प्रयोग होता है। हवन का धुआं पवित्र और शुद्ध होता है, जो पितरों की आत्मा तक पहुंचता है और उन्हें संतुष्टि प्रदान करता है ऐसा माना जाता है।

श्राद्ध कर्मकांड के बाद, परिवार के सभी सदस्य एक साथ भोजन करते हैं। इस भोजन को पवित्र और संतुष्टि से भरा माना जाता है, क्योंकि इसे पितरों के आशीर्वाद के रूप में ग्रहण किया जाता है। श्राद्ध कई प्रकार से किये जाते हैं ।नित्य श्राद्धः-यह श्राद्ध का एक प्रकार है जो नियमित रूप से किसी विशेष दिन पर किया जाता है। इसे वार्षिक श्राद्ध भी कहा जाता है। यह उस दिन किया जाता है जिस दिन पितर का निधन हुआ था। पार्वण श्राद्धः-इसे पितृ पक्ष में किया जाता है, जो अश्विन मास के कृष्ण पक्ष में आता है। यह श्राद्ध 15 दिन तक चलता है और इसमें सभी पितरों के लिए श्राद्ध कर्मकांड किए जाते हैं ।एकोद्दिष्ट श्राद्धः-यह श्राद्ध एक विशेष पितर के लिए किया जाता है, जो हाल ही में दिवंगत हुआ हो। इसे उसकी मृत्यु के बाद के पहले साल में किया जाता है ।सपिंडीकरण श्राद्धः- यह श्राद्ध विशेष रूप से माता-पिता की मृत्यु के बाद किया जाता है, जिसमें उनकी आत्मा को अन्य पितरों के साथ मिलाया जाता है। श्राद्ध केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह हमारे पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता और सम्मान व्यक्त करने का एक तरीका है। यह हमें हमारे पितरों के साथ जुड़े रहने और उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रयासरत रहने की प्रेरणा देता है। श्राद्ध के माध्यम से हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर और पारिवारिक परंपराओं को भी संरक्षित रखते हैं। यह अनुष्ठान न केवल पितरों की आत्मा को शांति प्रदान करता है, बल्कि हमें भी मानसिक और आध्यात्मिक संतोष का अनुभव कराता है। यह एक ऐसा अनुष्ठान है, जो हमारी संस्कृति की गहराई और हमारी धार्मिक आस्थाओं की पुष्टि करता है। श्राद्ध को उसकी पूरी विधि और शुद्धता के साथ करने से न केवल पितरों की आत्मा को शांति मिलती है, बल्कि हमारे जीवन में भी सुख, शांति और समृद्धि का आगमन होता है। इस प्रकार, श्राद्ध हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो हमें हमारी जड़ों से जोड़ता है और हमें अपने पूर्वजों के प्रति हमारे कर्तव्यों की याद दिलाता है।

रवींद्र कुमार शर्मा
घुमारवीं
जिला बिलासपुर हि प्र

हिन्दी दिवस के अवसर काव्यगोष्ठी का आयोजन

नफजगढ़। संस्था प्रांगण में संस्था अध्यक्ष राजेश शर्मा, कवयित्री व लेखिका सीमा रंगा इन्द्रा, डॉ नाथूलाल लोटवाडा द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन करवाया गया,जिसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय गीतकार डॉ जयसिंह आर्य ने की वरिष्ठ अतिथि के रूप में साहित्य सेवी प्रेम पाल सागर कुंजपुरा,डॉ सत्यवीर सिंह निराला रोहतक,रामेश्वर देव करनाल,अशोक आबशार दिल्ली, ,मनीष मधुकर दिल्ली रहे,समाचार निर्देश से मुकेश भोगल,अध्यक्ष व वरिष्ठ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया,काव्य धारा की शुरूआत डॉ वर्षा सिंह ने सरस्वती वंदना से की,डॉ जय सिंह आर्य ने हिंदी गीतों व मुक्तक के माध्यम से संदेश दिया, प्रेम पाल सागर ने जीने खातिर शुद्ध वायु भरपूर होना चाहिए, डॉ सत्यवीर सिंह निराला ने कहा कार्यालयों में भी काम करें हिंदी भाषा में,अशोक 'आबशार' ने कहा हिंदी हमारी प्यारी भाषा,रामेश्वर देव ने कहा ऋषि-मुनियों की धरती पर हिंदी का स्थान करो ऊंचा,मनीष मधुकर ने श्री राम पर लिखा गीत प्रस्तुत किया,कवि राजबीर खोरड़ा,संजोत सिंह करनाल,अबेंसन नीलोखेड़ी,गीता राघव,कौशल समीर, जयसिंह जीत झज्जर,सोनिका सवेरा, पवन शर्मा शिमला,सीमा वत्स, राजपाल राजन,अश्वनी पाराशर,कवयित्री व लेखिका सीमा रंगा इन्द्रा,डॉ नाथूलाल लोटवाडा, श्री राजेश शर्मा ने हिंदी में कविताएं मुक्त पेश कर बेहतरीन प्रस्तुति प्रस्तुत की। राजेश शर्मा ने प्रकृति भक्त बनो पेड़ों को बचाओ सबको संदेश दिया। कार्यक्रम का खुबसूरत मंच संचालन डॉ नाथूलाल लोटवाडा ने किया।

जातिवार जनगणना का महत्व

भारत कृषि प्रधान देश रहा ह तो इसकी अर्थ-व्यवस्था और जीवन-व्यवस्था ग्राम केंद्रित रही है। पारंपरिक रूप से ग्रामीण इलाकों में अर्थ-व्यवस्था और समग्र जीवन-व्यवस्था पर तथाकथित उच्च वर्ण का वर्चस्व था। सामान्यतः समय-समय पर आनेवाले शक्तिशाली आगंतुक जत्थों की कोई दिलचस्पी वर्ण-व्यवस्था, ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था ओर जीवन-व्यवस्था में किसी सकारात्मक बदलाव की नहीं होती थी बल्कि ऐसे भी साक्ष्य हें जो इन आगंतुकों को भी वर्णव्यवस्था के अंतर्गत शामिल कर लिया गया।

मेहनताना का नियंत्रण अंततः मेहनतकश पर नियंत्रण साबित होता है। खेतिहर मजदूर और कारीगर का मेहनताना 'सबकुछ' वर्चस्वशाली के द्वारा होता रहा है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि उच्च-कुल-शील लोगों के वर्चस्व की ग्राम-व्यवस्था में 'ग्राम-स्वराज' का अर्थ और यथार्थ बहुत कंटीला रहा हे। भारत बहुलताओं से भरा देश है यह सच है कि ग्राम-व्यवस्था के बारे में कही गई कोई बात इसके विभिन्न समाज के संदर्भ साथ-साथ लागू नहीं भी हो सकती है। बड़े-बड़े वृत्त में हम और वे के इतने सारे वृत्त! सबके यथार्थ भले ही अलग-अलग हों, अनुभव का सारांश लगभग एक ही होता है। शासन का अधिकार शोषण का अधिकार नहीं होता है। खेतिहर मजदूर और कारीगर अपने श्रम या उत्पाद की कीमत खुद तय नहीं कर सकते, न व्यक्ति स्तर पर न सामुदायिक स्तर पर न्याय-संगत मेहनताना और कीमत तय करने और उसे लागू करने में ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था में भी घुस गई पूंजी वादी मुनाफेदारी की प्रवृत्ति के सामने शासकीय इच्छा-शक्ति के शिथिल हो जाने से भी विषमता बढती है। बस उदाहरण के लिए किसान आंदोलन के मुद्दों पर गौर किया जा सकता है।

भारत में जाति का सवाल सदैव ज्वलंत रहा है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह बात कुछ हद तक सही लगती है कि पेशा के अनुसार जाति की

परंपरा चल पड़ी होगी। मतलब यह है कि पेशादारी की परंपरा कालांतर में जाति परंपरा बन गई। इस ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के उलझाव में पड़े बिना आज की परिस्थिति पर गौर करें तो साफ-साफ दिखता हे कि वर्ण-व्यवस्था के अंतर्गत इच्छा और सुविधा के मुताबिक पेशा अपनाने और जाति बदलने का मौका नहीं मिलता है। यानि पेशा के अनुसार जाति नहीं, जाति के अनुसार पेशा का निर्धारण हो जाता हे। भारत के संविधान के प्रवधानों के अनुसार किसी कोीाी कोइ पेशा अपनाने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता है। अपनी इच्छा, सुविधा और योग्यता के अनुसार कोई भी पेशा चुनने का मौका मिला है। इच्छा के मूल में कहीं-न-कहीं प्रेरणा की बड़ी भूमिका होती है ।सुविधा परिवार की पृष्ठभूमि से तय होती है। व्यक्ति की योग्यता बीज की तरह होती है। बीज के वृक्ष बनने की संभावनाएं अनुकूल परिस्थिति समाजिक जमीन और हवा-पानी से बनती है। अनुकूल हवा-पानी का सुयोग्य न मिलने पर व्यक्ति की योग्यता निर्योग्यता में बदल जाती है। निष्फल याग्यता को निर्योग्यता कहा जाता है, और इस अर्थ में यह अयोग्यता से ाीन्न होती है। वर्ण्ण व्यवस्था योगयता को निर्योग्यता में बदल देने का आधार बनाती रही है। वर्ण-व्यवस्था के अनुसार पारंपरिक रूप से पेशा के जाति के मुताबिक निर्धारित होने के कारण सामाजिक भेद-भाव और आर्थिक अन्याय की संस्थागत संरचना खड़ी हो गई। आरक्षण के संदर्भ में बात करते हुए यह भी कभी नहीं भूलना चाहिए कि कुछ -कुछ जातियों को परंपरा -पोषित आरक्षण की सुविधा हासिल रही है।

रोजगार के घटते हुए अवसर, मेहनताना की घटती हुई दर, बढ़ते हुए काम के घंटे, गिरता हुआ जीवन-स्तर, इन सबसे लापरवाह सत्ता की राजनीति में लोकतंत्र की कौन-सी कहानी छिपी हुई है यह साफ साफ समझना मुश्किल तो नहीं है। चारों ओर से कसी हुई, ऐसी चौकस व्यवस्था !इसके विरुद्ध हिलना-डुलना मुश्किल, जिस में हिलने-डुलने की थोड़ी-सी ताकत दिखी उसी को धर्म-पुरुष होने का गौरव हासिल हो गया, जाहिर है कि धर्मरक्षक बनने की ई श्वरीय आभा भी।

वर्ण व्यवस्था के धम्र ने नैसर्गिक आध्यात्मिक चेतना का पूरी तरह से आच्छादित कर लिया। हिन्दू समाज वर्ण-व्यवस्था के धम्र पर टिका रहता है। इतिहास गवाह है कि वर्ण-व्यवस्था की विरोधी चेतना को समाज से बाहर का रास्ता देखना पड़ गया। धम्र आधारित वर्ण व्यवस्था में अकुलाते मन और छटपटाती संभावनाओं ने प्रबुद्ध लोगों को धर्म-विरुद्ध करना शुरू कर दिया। ध्यान में रखना चाहिए कि भक्ति धर्म का विस्तार नहीं, विकल्प बनकर आइ थी। जिसने धम्र के नाम पर आडंबर का कड़ा विरोध किया था। हरि को भजे सो हरि का होई की घोषणा करती हुई। उस समय की धर्म-संस्थाओं ने संतों और संत-साहित्य के साथ कै सा सलूक किया था, यह याद किया जा सकता है। सामान्यतः कहा जा सकता है कि भारत के प्रबुद्धों ने विरोध और विद्रोह के अंतर का हमेशा ध्यान रखा और विरोध को कभी विद्रोह नहीं बनने दिया। सामाजिक क्रोध को राजनीतिक क्रांति नहीं बनने दिया। समाजवाद के सभी संस्करणों को इस प्रसंग में नए सिरे से सोचना चाहिए। **राम**

विलक्षण रचनाकार थे रांगेय राघव

रांगेय राघव हिंदी के सर्वोच्च रचनाकारों में से एक हैं। वे विलक्षण रचनाकार थे, जिनके लिए लिखना ही जीवन था। उन्होंने कम उम्र में विपुल लेखन किया। रांगेय राघव को महज उन्तालीस साल उम्र मिली और उन्होंने इतने ही उपन्यास लिखे। दस कहानी संग्रह, छः काव्य संग्रह, तीन नाटक और इसके अलावा रिपोर्ताज, आलोचना, इतिहास और दर्शन आदि पर कई किताबें लिखीं। उनकी किताबों की संख्या सौ से ज्यादा है। अध्ययन के शुरूआती पच्चीस साल अलग कर दें, तो उन्होंने महज चौदह सालों में बेशुमार काम किया। हिंदी साहित्य में इस मामले में सिर्फ राहुल सांकृत्यायन ही उनकी जोड़ी के हैं। पराधीन भारत में अंग्रेजी साम्राज्य विरोधी चेतना के विकास और स्वाधीनता आंदोलन में उनकी सक्रिय हिस्सेदारी रही। न सिर्फ अपने लेखन से बल्कि एक सामाजिक कार्यकर्ता के तौर पर उन्होंने आंदोलनों में भाग लिया। भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुराणों का उनका विस्तृत अध्ययन था। खास तौर से पुरातत्व और इतिहास से उन्हें प्यार था। जो कि उनकी रचनाओं में भी झलकता है। रांगेय राघव की मातृभाषा हिंदी नहीं थी, लेकिन वे हिंदी के लिए अपनी आखिरी सांस तक कुर्बान रहे। उन्होंने भारतीय परम्परा, संस्कृति और कला का मूल्यांकन मार्क्सवादी नजरिए से किया। अपने लेखन से दलित, शोषित, वंचितजनों में एक नई चेतना विकसित की।

रांगेय राघव ने शुरूआत में कविताएं ही ज्यादा लिखी। साल 1944 में आया 'अजेय खंडहर', रांगेय राघव का पहला खंडकाव्य था। इस खंडकाव्य में उन्होंने स्तालिनग्राद में लड़े गए युद्ध में लाल सेना की बहादुरी और नाजियों की बर्बरता की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति की थी। स्तालिनग्राद के संघर्ष को उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ दिया था। 'अजेय खंडहर' के अलावा 'मेधावी' और 'पिघलते पत्थर' कविता संग्रह में भी उन्होंने साम्राज्यवाद, सामंतवाद, शोषण, असमानता और वर्गभेद के खिलाफ अपनी आवाज उठाई। 'गोरखनाथ और उनका युग' विषय पर रांगेय राघव ने पीएचडी की। 'गोरखनाथ और उनका युग' एवं 'प्रगतिशील साहित्य के मानदंड' हिंदी आलोचना में मील का पत्थर मानी जाती हैं। यह शोध कार्य उन्होंने शांति निकेतन में रहकर किया। 'शांति निकेतन' के माहौल से उन्हें जो प्रेरणा मिली, उसके बाद तो उनके लेखन का सिलसिला रुका नहीं। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद रांगेय राघव चाहते, तो एक अच्छी नौकरी कर शानदार जीवन बिताते, लेकिन उन्होंने लेखन को चुना। लेखन को ही अपनी आजीविका और समाज सुधार का माध्यम बनाया। लिखने की रफ्तार उनकी ऐसी थी कि कहानी, एक दिन में ही

लिख देते थे। कहानी ही नहीं, उनके कुछ उपन्यास भी एक-दो दिन में लिखे गए हैं। 'पराया' और 'काका' उपन्यास उन्होंने सिर्फ दो-दो दिन में लिख डाले थे। शेक्सपियर के पन्द्रह नाटकों का अनुवाद रांगेय राघव ने सिर्फ पन्द्रह दिन में पूरा कर लिया था। यही नहीं अपनी प्रसिद्ध किताब 'प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास' उन्होंने एक महीने में लिखी थी। इसी तरह उनकी अद्वितीय कहानी ह्यगदल' लिखी गई थी। यह कहानी अपने समय की चर्चित लघु पत्रिका 'कहानी' में छपी। कहानी छपते ही हिंदी साहित्य में तहलका मच गया। आज भी यह कहानी हिंदी साहित्य की श्रेष्ठ कहानी मानी जाती है। 'गदल' का अनुवाद भारतीय भाषाओं के साथ-साथ विदेशी भाषाओं में हुआ। 'गदल' के अलावा 'पंच परमेश्वर', 'देवदासी', 'नई जिंदगी के लिए' आदि उनकी कहानियां भी अपने समय में काफी चर्चा में रहीं।

साल 1946 में आया 'घरौंदे' रांगेय राघव का पहला उपन्यास है। इसी साल बंगाल अकाल पर उनका एक और उपन्यास 'विषादमठ' आया। 'मुर्दों का टीला' वह उपन्यास है, जिससे रांगेय राघव को देशव्यापी प्रसिद्धि मिली। ईसा से 3500 पूर्व मोअन-जो-दड़ो की सभ्यता को केन्द्र बिंदु बनाकर लिखे गए इस उपन्यास में उनका विस्तृत अध्ययन देखते ही बनता है। अंधेरे के जुगनू', 'प्रतिदान', और 'चीवर' में ऐतिहासिक और पौराणिक किरदारों के इर्द-गिर्द उन्होंने उपन्यास बुने हैं। उनका ऐतिहासिक उपन्यास 'महायात्रा' दो खंडों 'अंधेरा रास्ता' एवं 'रैन और चंदा' शीर्षक से है। 'अंधेरा रास्ता' में जहां प्रागैतिहासिक काल का वर्णन है, 'रैन 'और चंदा' में उन्होंने जनमेजय से लेकर अजातशत्रु तक यानी बर्बर दासप्रथा से सामंती व्यवस्था के उदय तक की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थितियों का ब्यौरा दिया है। 'एक छोड़ एक', 'जीवन के दाने', 'साम्राज्य का वैभव', 'अंगारे न बुझे', 'इंसान पैदा हुआ', 'मेरी प्रिय कहानियां' आदि ररांगेय राघव के प्रमुख कहानी संग्रह हैं। रांगेय राघव का आलोचना कार्य भी काफी व्यापक है। 'काव्य, कला और शास्त्र', 'भारतीय चिंतन', 'समीक्षा और आदर्श, 'काव्य, यथार्थ और प्रगति', 'हिंदी साहित्य की धार्मिक और ने सामाजिक पूर्वपीठिका', 'भारतीय पुनर्जागरण की भूमिका', 'तुलसीदास का कथा-शिल्प' और 'आधुनिक हिंदी कविता में विषय और शैली' उनकी प्रमुख आलोचना संबंधी किताबें हैं। साल 1943-44 में बंगाल में जब सदी का भयंकर अकाल पड़ा, तो उन्होंने बंगाल की यात्रा की, बल्कि इस पूरी यात्रा में उन्होंने जो जाना-भोगा उसे रिपोर्ताज के तौर पर लिखा। जो 'हंस' और 'विशाल भारत' पत्रिका में सिलसिलेवार प्रकाशित हुए। जो बाद में 'तूफानों के बीच' किताब की शक्ल में आए। 'तूफानों के बीच' हिंदी साहित्य का पहला रिपोर्ताज माना जाता है। रांगेय राघव एक साहित्यकार के साथ-साथ संस्कृतिकर्मी भी थे। वे 'आगरा कल्चरल स्क्वैड' से भी जुड़े रहे। बाद में जब आगरा इप्टा का गठन हुआ, तो वे इसके सक्रिय सदस्य हो गए। बंगाल अकाल पर उन्होंने कई जज्बाती और जोशीले जन गीत और एक नृत्य नाटिका लिखी। उनके जनगीत ₹टेम्स हो या यांक्सी क्यांग/वोल्गा हो या गंगा हो/सबकी एक लड़ाई है/दुनिया की आजादी की', 'गांव-गांव नगर-नगर में आज यही ललकार उठे/परदेशी का राज न हो, बस यही हुंकार उठेह और ₹बापू बोल-बोल/यह है देश की पुकार/जिन्ना बोल-बोल...₹ उस समय देश भर में काफी लोकप्रिय हुए। गोवा के मुक्ति आंदोलन पर लिखा उनका पूर्णकालिक नाटक 'आखिरी धब्बा' आगरा इप्टा द्वारा अनेक बार मंचित हुआ। नटों के जीवन पर 'कब तक पुकारूं' और लोहपीटे या गड़रिया लोहारों पर उन्होंने 'धरती मेरा घर' जैसे क्लासिक उपन्यासों की रचना कर दी थी। साल 1955 में जब यह उपन्यास आया, तो इसने हिंदी साहित्य में हलचल मचा दी। हिंदी साहित्य के अंदर जो प्रगतिशील आंदोलन चला, उसमें भी रांगेय राघव की महत्वपूर्ण भूमिका रही। साल 1954 में आई उनकी किताब 'प्रगतिशील साहित्य के मानदंड', कई महत्वपूर्ण सवालों की पड़ताल करती है। इस किताब में उन्होंने बड़े ही बेबाकी और तर्कशीलता से अपने विचार रखे हैं। रांगेय राघव एक वर्गविहीन समाज जिसमें न कोई छोटा, न कोई बड़ा हो।

धारा 163 लागू

लखनऊ। बारावफात, ईद-ए-मिलाद, विश्वकर्मा पूजा, अनंत चतुर्दशी, महात्मा गांधी जयंती, शारदीय नवरात्र सहित अन्य त्योहारों, विभिन्न राजनीतिक पार्टियों और संगठनों के धरना प्रदर्शन के चलते शहर में 15 सितंबर से 13 नवंबर तक धारा 163 लागू की गई है। बीएनएस की धारा 163 पूर्व में आईपीसी की धारा 144 थी। जेसीपी एलओ अमित कुमार के मुताबिक धारा 163 के तहत विधान भवन व सरकारी कार्यालयों के ऊपर व एक किमी परिधि में ड्रोन से शूटिंग करना मना होगा। शहर के अंदर तेज धार वाले तथा नुकीले शस्त्र, ज्वलनशील पदार्थ व हथियार तथा आदि लेकर चलने पर प्रतिबंध रहेगा।

यह कहकर कि बलात्कार मानवता के लिए अभिशाप है और ऐसे अपराधों को रोकने के लिए सामाजिक सुधारों की जरूरत है, यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी हर सरकार की है कि कानून प्रभावी ढंग से लागू किए जाए और यौन हमलो को रोकने व दंडित करने के लिए पुलिस बिना पक्षपात के काम करे। अगर महिलाओं के लिए पहले घरो व कार्यस्थलों को महफूज बनाकर उनके आगे बढ़ने की राह से अवरोध हटाए जाए तो इसाफ और अच्छे से दिया जा सकेगा।

अपराजिता के लिए पहले घरों और कार्यस्थलों को सुरक्षित बनाना होगा

प्रियंका सौरभ

हर जघन्य यौन अपराध के बाद सजा-ए-मौत का शोर उठना और अध्यादेश जारी करके या विधेयक पारित करके इसे मान लेना, काफी आम हो गया है। दिल्ली में एक महिला से वहशियाना दुष्कर्म के बाद 2013 में आपराधिक कानूनों में बदलाव किया गया। उसके बाद, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और अरुणाचल प्रदेश समेत कई राज्यों ने यौन हमले के लिए बढ़ी हुई सजा को खातिर संशोधन किए। अब पश्चिम बंगाल में अपराजिता महिला एवं बाल (पश्चिम बंगाल आपराधिक कानून संशोधन) विधेयक, 2024 में यौन अपराधों के लिए देठ बढ़ाने का प्रावधान किया गया है, खास तौर पर महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराधों पर ध्यान केंद्रित करते हुए विधेयक में बलात्कार के विशिष्ट मामलों के लिए अनिवार्य मृत्युदंड और त्वरित जांच जैसे कड़े उपाय प्रस्तुत किए गए है। यह किसी बड़ी आपराधिक घटना के बाद जन आक्रोश पर पश्चिम बंगाल की विधायी प्रतिक्रिया को उजागर करता है, जिसका उद्देश्य कानूनी ढांचे को मजबूत करना और त्वरित न्याय सुनिश्चित करना है। विधेयक में दुष्कर्म पीड़िता को मृत्यु होने अथवा मरणासन्न अवस्था में पहुंचने पर मृत्यु देठ का प्रावधान किया गया है, जिससे निवारक प्रभाव और अधिक बढ़ जाएगा। विधेयक में यह प्रावधान किया गया है कि यौन अपराधों की जांच 21 दिनों के भीतर पूरी की जाए, जिसका उद्देश्य न्याय में तेजी लाना है।

विधेयक पीड़ितों की पहचान की सुरक्षा को मजबूत करता है, तथा खुलासा करने पर 3-5 वर्ष के कारावास का प्रावधान करता है। विधेयक में यौन हिंसा के मामलों के लिए समर्पित विशेष न्यायालयों की स्थापना का प्रस्ताव है जिससे कानूनी प्रक्रियाओं में तेजी आएगी। विधेयक, नाबालिगों के यौन शोषण से जुड़े मामलों को लक्षित करता है, कठोर दंड और बढ़ी हुई निगरानी लागू करता है। विधेयक पुनर्वास और सामाजिक सुधारों के बजाय दंडात्मक कार्रवाइयों को अधिक प्राथमिकता देता है, तथा गहन प्रणालीगत मुद्दों की उपेक्षा करता है। कठोर दंड के बावजूद यौन अपराधों में निरंतर वृद्धि हो रही है, जो विशुद्ध दंडात्मक कानूनों के सीमित प्रभाव को दशार्ता है। विशेष न्यायलयों की स्थापना से मौजूदा न्यायिक ढाँचे पर दबाव पड़ सकता है, जिससे संभावित रूप से प्रक्रियागत देरी हो सकती है। निर्भया के बाद शुरू की गई फास्ट ट्रैक कोर्ट को भी बोझिल कानूनी व्यवस्था और संसाधनों की कमी के कारण, इसी तरह की देरी का सामना करना पड़ा।

निवारक के रूप में मृत्यु दंड के उपयोग पर व्यापक रूप से बहस हुई है, परंतु इसकी प्रभावशीलता के साक्ष्य, सीमित है। वर्मा समिति की रिपोर्ट ने इस बात पर प्रकाश डाला कि मृत्यु दंड से यौन अपराधों में पर्याप्त कमी नहीं आती है, इसलिए अधिक प्रभावी समाधानों की आवश्यकता है। यह विधेयक केंद्रीय कानून के साथ संभावित संघर्ष उत्पन्न करता है, जिससे कानूनी चुनौतियों के कारण कार्यान्वयन में देरी होने की संभावना है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 254 के अनुसार ऐसे संशोधनों के लिए राष्ट्रपति को स्वीकृति आवश्यक है, जिससे कानून का लागू होना जटिल हो जाता है। विधेयक यौन हिंसा पर शिक्षा या जन जागरुकता अभियान जैसे निवारक उपायों को पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं करता है। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसे कार्यक्रम जागरूकता और रोकथाम पर ध्यान केंद्रित करते है, जो ऐसे अपराधों को कम करने के लिए अधिक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करते है। पीड़ितों के लिए सशक्त पुनर्वास और मनोवैज्ञानिक सहायता प्रणालियां शुरू करना दंडात्मक उपायों का पूरक होगा । यौन अपराध के मामलों से निपटने में होने वाली देरी को कम करने के लिए न्यायिक बुनियादी ढांचे को अधिक संसाधन आवंटित करना आवश्यक है। भारत सरकार द्वारा ई-कोर्ट परियोजना का उद्देश्य न्यायपालिका को डिजिटल बनाना है, जिससे मामलो का तेजी से निपटारा हो सके। स्कूली बच्चों और आम जनता को लक्षित करके जागरूकता अभियान चलाकर यौन हिंसा के मूल कारणों को संबोधित करते हुए इस तरह की घटनाओं को कम करने में मदद मिल सकती है।

सखी वन स्टॉप सेंटर पहल शिक्षा और जागरुकता प्रदान करती है, जिससे महिलाओं को अपराधों को जल्द रिपोर्ट करने का अधिकार प्राप्त होता है। राज्य के कानूनों का केंद्रीय ढांचे के साथ सामंजस्य होने से सुचारू कार्यान्वयन सुनिश्चित होता है और अनावश्यक संघर्ष से बचा जा सकता है। केरल में राज्य की पहलों के साथ पोक्सो का सफल सरेखण एक सहयोगी दृष्टिकोण के लाभों को दशार्ता है। स्कूलों में आत्मरक्षा प्रशिक्षण और लिंग संवेदीकरण जैसे दीर्घकालिक निवारक उपायों को शुरू करने से यौन हिंसा को रोकने में मदद मिल सकती है। दिल्ली पुलिस निःशुल्क आत्मरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करती है, जिसे पूरे देश में लागू किया जा सकता है। अपराजिता विधेयक पश्चिम बंगाल में यौन हिंसा को संबोधित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो सार्वजनिक आक्रोश के प्रति विधायी प्रतिक्रिया को दशार्ता है। हालांकि, प्रभावी कार्यान्वयन के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जो दंडात्मक उपायों को पुनर्वास सार्वजनिक जागरूकता और बुनियादी ढांचे के समर्थन के साथ जोड़ता है। राज्य और केंद्र के बीच एक समन्वित प्रयास, महिलाओं और बच्चों के लिए स्थायी सुरक्षा सुनिश्चित करेगा तथा दीर्घकालिक सामाजिक परिवर्तन और उन्नत सुरक्षा को बढ़ावा देगा।

इस बात के बहुत कम सबूत है कि मौत की सजा देने से यौन अपराध थम जाते है, लेकिन ऐसे अपराधों के बाद ज्यादा कठोर कानूनों की मांग पर अक्सर एक आधिकारिक प्रतिक्रिया होती है। यह कहकर कि बलात्कार मानवता के लिए अभिशाप है और ऐसे अपराधों को रोकने के लिए सामाजिक सुधारों की जरूरत है, यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी हर सरकार की है कि कानून प्रभावी ढंग से लागू किए जाए और यौन हमलो को रोकने व दंडित करने के लिए पुलिस बिना पक्षपात के काम करे। अगर महिलाओं के लिए पहले घरो व कार्यस्थलों को महफूज बनाकर उनके आगे बढ़ने की राह से अवरोध हटाए जाए तो इसाफ और अच्छे से दिया जा सकेगा।

बड़े कांटे हैं इस राह में कई...

छोटे-छोटे शहरों से सपनों को लेकर शहरों की ओर आयी लड़कियों के जीवन में कितनी समस्याएं हैं जिसका अन्दाजा लगाना मुश्किल है। इन समस्याओं में बहुत सी विभिन्नताएं हैं। शहरों में आवास, भोजन शिक्षा परिवहन, सुरक्षा बहुआयाती समस्याएं है जिनसे आये दिन हमारी लड़कियों दो चार हो रही हैं। यही हाल श्रम में उनकी भागीदारी को लेकर भी है। हाल ही में किए गए पीरियॉडिक लेबर फोर्स सर्वे (पीएलएफएस) के अनुसार, साल 2022-23 में भारत की कुल श्रम शक्ति में महिलाओं की भागीदारी करीब 37 फीसदी रही। जबकि 2017-18 में यह प्रतिशत 23.3 फीसदी थी। इस बढ़ती भागीदारी के साथ, सरकारी नौकरियों में भी महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ रही है। यूपीएससी द्वारा अनुशंसित महिला उम्मीदवारों का प्रतिशत 2018 में 24 फीसदी से बढ़कर 2022 में 34 फीसदी हो गया है. इस प्रकार का चलन अन्य परीक्षाओं में भी देखने को मिला है. लेकिन शहरों में पढ़ने के लिए लड़कियों की चुनौतियां अभी बनी हुई है। भारत की श्रम शक्ति में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के साथ ही सरकारी नौकरियों में भी उनकी हिस्सेदारी बढ़ रही है। लेकिन, सरकारी नौकरी की परीक्षा की तैयारी करने गांव से शहर का रुख करने वाली लड़कियों की राह में कई कांटे हैं। सरकार ने महिलाओं के लिए फीस में कटौती और परीक्षा केंद्रों को घर से ज्यादा दूर न देने जैसे कदम उठाए हैं। जिनका प्रभाव प्रतियोगी परीक्षा परिणामों में भी दिखता है। लेकिन यह अपर्याप्त है। शहरों में बेहतर शिक्षा की तलाश में दूर-दराज के इलाकों से लड़कियां अपने सपनों को साकार करने के लिए आ रही हैं। लेकिन, इस सफर में उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। एक ओर जहां बड़े शहरों में शिक्षा की सुविधाएं उपलब्ध हैं, वहीं दूसरी ओर इन सुविधाओं तक पहुंच बनाना लड़कियों के लिए आसान नहीं है। दिल्ली के करोल बाग में यूपीएससी की तैयारी कर रही निशा ने बताया, पीजी में एक बेड का किराया 10 हजार है और कमरा चार लड़कियों के साथ शेयर करना पड़ता है। शहरों में रहने की महंगी व्यवस्था के अलावा भी सुरक्षा की चिंता लड़कियों के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन जाती है। निशा बताती हैं, पढ़ने के लिए सुबह 8 बजे लाइब्रेरी के लिए निकल जाती हूं, और रात को 10 बजे सोने के समय कमरे में लौटती हूं। दिल्ली के ही संगम विहार में एक पेइंग गेस्ट हाउस के मालिक ने बताया कि एक बेड का किराया 10 हजार रुपये है। वहीं, करोल बाग के एक पीजी मालिक का कहना है कि अगर एक अकेले का कमरा चाहिए, तो किराया 26 से 30 हजार तक है। लड़कियों के लिए शहर में अलग से फ्लैट लेकर रहना भी आसान नहीं होता, क्योंकि सुरक्षा की चिंता हमेशा बनी रहती है। दूरदराज के इलाकों से आने वाली लड़कियों के लिए नेटवर्क की समस्या भी एक बड़ा मुद्दा है। प्रतापगढ़ की अंकिता त्रिपाठी, जो नेट की तैयारी कर रही हैं, बताती हैं कि उन्हें नेटवर्क की समस्या के कारण अपने रिश्तेदारों के घर रहना पड़ता है। गांव में नेटवर्क नहीं आता, इसलिए प्रतापगढ़ जाकर रिश्तेदारों के यहां रहकर पढ़ाई करती है। अंकिता कहती हैं कि नेटवर्क इशू रहता है इसकी वजह से ही तो जाना पड़ता है वरना पढ़ना तो ऑनलाइन में ही था। महिलाओं के लिए शहर में रहना और शिक्षा हासिल करना सिर्फएक चुनौती ही नहीं, बल्कि उनके सपनों को साकार करने की दिशा में एक संघर्ष भी है। इन कठिनाइयों के बावजूद, लड़कियां अपने घरों से दूर रहकर, महंगे किराए पर छोटे कमरों में रहकर, और सुरक्षा की चिंताओं के बावजूद भी पढ़ाई कर रही हैं। उनके इस संघर्ष की कहानी यह भी बताती है कि अब भी समाज से समर्थन और सुविधाओं - वे अपने पापों को पूरा कर सकें।

सोनम मिश्रा

हाल ही में किए गए पीरियॉडिक लेबर फोर्स सर्वे (पीएलएफएस) के अनुसार, साल 2022-23 में भारत की कुल श्रम शक्ति में महिलाओं की भागीदारी करीब 37 फीसदी रही। जबकि 2017-18 में यह प्रतिशत 23.3 फीसदी थी। इस बढ़ती भागीदारी के साथ, सरकारी नौकरियों में भी महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ रही है। यूपीएससी द्वारा अनुशंसित महिला उम्मीदवारों का प्रतिशत 2018 में 24 फीसदी से बढ़कर 2022 में 34 फीसदी हो गया है. इस प्रकार का चलन अन्य परीक्षाओं में भी देखने को मिला है. लेकिन शहरों में पढ़ने के लिए लड़कियों की चुनौतियां अभी बनी हुई है।

पंजाब और हरियाणा में गहराता गंभीर जल संकट

फसल विविधीकरण और जल बचत प्रथाओं के लाभों के संबंध में किसानों को शिक्षित करने से दीर्घकालिक परिवर्तन को बढ़ावा मिल सकता है। केंद्र और राज्य सरकारों के बीच समन्वित प्रयास, पुनर्गठित सब्सिडी, जल- कुशल प्रथाओं और बाजार आश्वासन पर ध्यान केंद्रित करके, पंजाब और हरियाणा को सतत कृषि की ओर उन्मुख किया जा सकता है।

हरित क्रांति के बाद पंजाब और हरियाणा मुख्य खरीफ फसल के रूप में धान की खेती, फसल की सघनता में भारी तेजी से शहीरकरण और औद्योगीकरण के कारण जल-संकटग्रस्त राज्य बन गए हैं। पंजाब और हरियाणा में धान की खेती भारत की खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, परंतु जल पर अत्यधिक निर्भरता के कारण यह असंधारणीय होती जा रही है। धान की खेती के कारण भूजल का अत्यधिक दोहन होने से इस क्षेत्र में गंभीर जल संकट उत्पन्न हो गया है। हरियाणा में 88 जल इकाइयों को अत्यधिक दोहन वाली श्रेणी में रखा गया है। इस समस्या से निपटने के लिए कृषि और जल संसाधन दोनों की सुरक्षा के लिए तत्काल सुधार की आवश्यकता है।

भूजल का अत्यधिक दोहनः पंजाब और हरियाणा में धान की खेती के लिए अत्यधिक सिचाई की आवश्यकता होती डू जिससे भूजल स्तर में भारी कमी आई है। केंद्रीय भूजल बोर्ड के 2023 में किए गए अध्ययन में पाया गया कि धान की खेती के लिए अत्यधिक जल दोहन के कारण पंजाब के 87% ब्लॉकों का अति दोहन किया गया। धान की खेती में प्रति किलो चावल के लिए लगभग 4,000-5,000 लीटर जल की खपत होती है, जिससे क्षेत्र के जल संसाधनों पर बहुत ज्यादा दबाव पड़ता है। इसकी तुलना में बाजरे को प्रति किलो केवल 500 लीटर जल की आवश्यकता होती है, जो जल की आवश्यकताओं में भारी अंतर और धान की खेती की असंधारणीय प्रकृति को दर्शाता है। ट्यूबवेल के लिए दी जाने वाली मुफ़्त बिजली ने भूजल के अनियंत्रित दोहन को बढ़ावा दिया है, जिससे यह संकट और भी बढ़ गया है। पंजाब के किसानों को वर्ष 2023-24 में बिजली, नहर के पानी और उर्वरक के लिए 38,973 रुपये प्रति हेक्टेयर की सब्सिडी मिली, जिससे भूजल का निरंतर रूप से अतिदोहन हो रहा है। धान की खेती के कारण बढ़ता जल तनाव, जलवायु परिवर्तन के कारण और भी अधिक हो गया है, अनियमित वर्षा के कारण जलभूतों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। पंजाब और हरियाणा के जल स्तर में तेजी से हो रही गिरावट से कृषि की दीर्घकालिक व्यवहार्यता को खतरा है।

धान की खेती एकल फसल प्रणाली को बढ़ावा देती है, जिससे जैव विविधता कम होती है और मृदा के पोषक तत्व कम होते है, जिससे कृषि संधारणीयता में कमी आती है। अध्ययनों के अनुसार फसल चक्रण से मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार होता है परंतु धान की खेती ऐसी विविधता को हतोत्साहित करती है। जल की अधिक माँग के कारण रासायनिक उर्वरकों का उपयोग भी बढ़ जाता है, जिससे मृदा की गुणवत्ता और भी खराब हो जाती है तथा जल स्रोत प्रदूषित हो जाते है। बाढ़ सिंचाई, धान की खेती में प्रयुक्त होने वाली एक प्रमुख विधि है, जिससे वाष्पीकरण और अपवाह के माध्यम से जल की बहुत बबार्दी होती है। निरंतर धान की खेती से मृदा लवणता बढ़ जाती है, जिससे कृषि भूमि की उत्पादकता कम हो जाती है और यह अन्य फसलों के लिए कम उपयुक्त हो जाती है। धान के खेत, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में महत्वपूर्ण योगदान देते है, विशेष रूप से मीथेन के उत्सर्जन में जो जलवायु परिवर्तन को बढ़ाता है और दीर्घकालिक कृषि व्यवहार्यता को प्रभावित करता है। धान की खेती प्रति हेक्टेयर 5 टन काबोर्टीऑक्सीडे समतुल्य हानिकारक गैस उत्पन्न करती है, जो इसे कृषि उत्सर्जन में एक प्रमुख योगदानकर्ता बनाती है। दालो, तिलहनो और बाजरा जैसी कम जल की खपत वाली फसलों की खेती को प्रोत्साहित करने से जल का उपयोग काफी कम हो सकता है और संधारणीयता में सुधार हो सकता है। पंजाब की 2024 की योजना, धान को छोड़कर वैकल्पिक फसलों को उगाने के लिए 17.500 रुपये प्रति हेक्टेयर प्रोत्साहन की पेशकश करती है, जिसका उद्देश्य विविधीकरण को प्रोत्साहित करना है। किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए धान से अन्य संधारणीय फसलों पर सब्सिडी को पुनर्निर्देशित करना आवश्यक है। डायरेक्ट सीडिंग ऑफ राइस और सूक्ष्म सिचाई प्रणालियों जैसी प्रथाओं को बढ़ावा देने से पैदावार को बनाए रखते हुए जल संरक्षण में मदद मिल सकती है। एमएसपी और खरीद कार्यक्रमों के माध्यम से दालो और तिलहन जैसी फसलों के लिए बाजार आश्वासन सुनिश्चित करने से किसानों के धान के अलावा अन्य फसलों को उगाने का डर कम हो सकता है। भारतीय खाद्य निगम ने वर्ष 2023 में पंजाब का 92.5% चावल खरीदा, इसी तरह के तंत्र वैकल्पिक फसलों को उगाने की प्रथा को बढ़ावा दे सकते हैं।

फसल विविधीकरण और जल बचत प्रथाओं के लाभों के संबंध में किसानों को शिक्षित करने से दीर्घकालिक परिवर्तन को बढ़ावा मिल सकता है। केंद्र और राज्य सरकारों के बीच समन्वित प्रयास, पुनर्गठित सब्सिडी, जल- कुशल प्रथाओ और बाजार आश्वासन पर ध्यान केंद्रित करके, पंजाब और हरियाणा को सतत कृषि की ओर उन्मुख किया जा सकता है। इस तरह के सुधार कृषि उत्पादकता को पर्यावरण संरक्षण के साथ संतुलित करेंगे, क्षेत्र के जल संसाधनों को सुरक्षित करेंगे और इसके कृषक समुदायों के भविष्य को सुनिश्चित करेंगे।

डॉ. सत्यवान सौरभ

घृणित अपराधों पर भाजपा की खामोशी

महिला उत्पीड़न, बलात्कार व हत्या जैसे घृणित अपराधों में यह भी देखा गया है कि ऐसे कई भाजपा शासित राज्यों में होने वाली ऐसी सनसनीखेज वारदातों में भाजपा की ओर से खामोशी बरती गयी जबकि किसी गैर भाजपा शासित राज्य खासकर बंगाल में यदि कोई घटना घटी तो उसे भाजपा द्वारा इस हद तक उछाला गया कि बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाये जाने की चर्चा तक छिड़ गयी ? जबकि मणिपुर में महिलाओं के साथ जैसे जुल्म हुये वह स्वतंत्र भारत के इतिहास में आज तक कहीं भी नहीं हुए। परन्तु चूँकि मणिपुर भाजपा शासित राज्य है इसलिए इन घटनाओं के लिये न तो वहां के मुख्यमंत्री को जिम्मेदार ठहराया गया न ही किसी से त्याग पात्र माँगा गया ?

उत्तरांचल में भी ऊंचे रसूख रखने वाले भाजपाई नेता के पुत्र बलात्कार, हत्या जैसे मामलों में शामिल पाए गए। भाजपा शासित राज्यों में घटी ऐसे अनेक घटनायें सरकार की 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' की मुनादी पर सवाल खड़ा कर रही हैं। इसी बीच ओलम्पियन विनेश फोगाट का कांग्रेस का दामन थामना भी भाजपा के लिये बड़ा सिर दर्द साबित हो सकता है। क्योंकि विनेश फोगाट उन विश्वस्तरीय ओलम्पिक पदक विजेता पहलवानों में एक है जिसने उत्तर प्रदेश के पूर्व भाजपा सांसद व भारतीय कुश्ती महासंघ के पूर्व अध्यक्ष बृज भूषण सिंह द्वारा कुछ महिला पहलवानों के साथ कथित रूप से किये गये दुर्व्यवहार के विरुद्ध मोर्चा खोलते हुये जंतर मंतर पर धरना दिया था। यह धरना गत वर्ष 28 मई 2023 को उस समय और भी सुर्खियों में छा गया था जबकि उस दिन नये संसद भवन के उद्घाटन के अवसर पर बृज भूषण सिंह के विरुद्ध धरनारत इन पहलवानों को दिल्ली पुलिस ने बलपूर्वक जंतर मंतर से घसीट कर धरना समाप्त करा दिया था। ओलम्पियन विनेश फोगाट के कांग्रेस में शामिल होने तथा जुलाना विधानसभा क्षेत्र से अपनी चुनावी पारी की शुरूआत करने के बाद एक बात यह भी स्पष्ट हो गयी है कि कांग्रेस विनेश का इस्तेमाल केवल स्पोर्ट्स स्टार और जाट चेहरे मात्र के रूप में ही नहीं करेगी बल्कि वह इस सुप्रसिद्ध व लोकप्रिय ओलम्पियन के बहाने भारतीय जनता पार्टी को महिला सुरक्षा के नाम पर देशभर में घेरने का भी प्रयास करेगी। भाजपा ने 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' का नारा देकर तथा इस योजना के प्रचार पर सैकड़ों करोड़ रूपए खर्च कर देश की जनता को यह सन्देश देने की कोशिश की थी कि भाजपा ही बेटी/महिलाओं की एकमात्र हितैषी पार्टी है तथा भाजपा के राज में ही महिलाओं के हितों की पूरी रक्षा व मान-सम्मान संभव है। परन्तु यह भी अजीब संयोग है कि इसी भाजपा के राज में देश के अनेक प्रांतों में ऐसी सैकड़ों घटनाएं हो चुकीं जो महिलाओं पर होने वाले अत्याचार में एक मिसाल बन गयीं। क्या मणिपुर तो क्या बंगाल, राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश जैसे राज्यों से तो ऐसी रूह कांपने वाली अनेक घटनाएं हो चुकीं जिनकी दूसरी कोई मिसाल नहीं मिलती।

एक तरफ तो उत्पीड़न की शिकार देश का मान सम्मान विश्व में बढ़ने वाली बेटियां पुलिस जुल्म का शिकार हो रही थीं उन्हें सड़कों पर घसीटा जा रहा था। जबकि ठीक उसी समय नारी उत्पीड़न का आरोपी बृज भूषण सिंह मुस्कुराता हुआ नवनिर्मित संसद भवन के उद्घाटन समारोह की शोभा बढ़ा रहा था। इन्हीं धरनारत पहलवानों में दिल्ली पुलिस की ज्यादतियों का शिकार एक खिलाड़ी विनेश फोगट भी थी जो अब कांग्रेस में शामिल होकर पूरे देश को भाजपा के 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' के खोखले दावों और इसकी हकीकत में अंतर से परिचय कराएगी। इसी महिला सम्मान के सवाल को लेकर एक और 'सेल्फ गोल' करते हुये भाजपा द्वारा हरियाणा विधानसभा चुनाव में चरखी दादरी से पूर्व जेलर सुनील सांगवान को टिकट दिया गया है। सुनील सांगवान की विशेषता यह है कि रोहतक की सुनारिया जेल में उनके जेल अधीक्षक के कार्यकाल के दौरान रेप व हत्या के दोषी गुरमीत राम रहीम को 6 बार पैरोल मिली थी। इस पैरोल को दिलाने में सहायता करने में जेलर सुनील सांगवान की विशेष भूमिका थी। राम रहीम को मिली पिछली पैरोल के दौरान ही यह स्क्रिप्ट लिखी जा चुकी थी। तभी जैसे ही राम रहीम अपनी पैरोल खत्म कर जेल पहुंचा उसके फौरन बाद ही सुनील सांगवान ने जेलर पद से त्याग पत्र दिया जिसे फौरन स्वीकार भी कर लिया गया।

उसके अगले ही दिन उन्होंने सार्वजनिक मंच पर आकर भाजपा ज्वाइन की। और दो दिन बाद ही भाजपा की पहली सूची में ही चरखी दादरी से सुनील सांगवान का नाम भाजपा प्रत्याशी के रूप में सामने आ गया। गोया 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' का नारा देने वाली भाजपा में गुरमीत राम रहीम जैसे रेप और हत्या के दोषी व सजा काट रहे अपराधी की इतनी पहुँच है कि वह अपनी पसंद के व्यक्ति को पार्टी टिकट भी दिला सकता है ? साथ ही ऐसे अपराधी का 'करम फरमाँ' जेलर चुनाव मैदान में आकर महिला सुरक्षा के विषय में अपने क्या विचार रखेगा ? यह सब सवाल ओलम्पियन विनेश फोगाट आगामी चुनाव में केवल हरियाणा ही नहीं बल्कि कांग्रेस की स्टार प्रचारक के रूप में भाजपा से देश भर में पूछने जा रही है।

भाजपा स्वयं को उन आरोपों से भी दूर नहीं रख सकती जो उसपर बिल्कीस बानो के सजायाफ़्ता अपराधियों की रिहाई को लेकर लगे थे। क्योंकि गुजरात की भाजपा सरकार ने तो उन सामूहिक बलात्कारियों व हत्यारों को रिहा कर दिया था परन्तु सर्वोच्च न्यायलय ने गुजरात सरकार के इस फैसले को निरस्त हुए उन्हें पुनः जेल की सलाखों के पीछे धकेला। तब कहाँ चला गया था भाजपा का महिला सुरक्षा का दावा ? बेटी बचाओ योजना का उस समय ध्यान क्यों नहीं आया ? जब भाजपा सरकार के मंत्री विधायक व कार्यकर्ता कठुआ की 8 वर्षीय आसिफा के बलात्कार व उसकी हत्या के आरोपियों के पक्ष में जुलूस निकाल रहे थे। जब उनके पक्ष में तिरंगा यात्रा निकल कर तिरंगे को भी बदनाम करने की कोशिश कर रहे थे उस समय कहाँ था भाजपा का नारी न्याय और बेटी बचाओ का उद्घोष ?

ऐसे और अनेक सवाल जो भाजपा में महिला बाल विकास मंत्री रही स्मृति ईरानी नहीं पूछ सकीं उस तरह के सवाल अब विपक्षी इंडिया गठबंधन की तरफ से विनेश फोगाट यानी एक ऐसी ओलम्पियन देश में घूम घूम कर पूछेगी जो कि स्वयं नारी शोषण शिकार रही है वह भी कथित रूप से भाजपा के दबंग सांसद के द्वारा ? इसलिये विनेश फोगट का कांग्रेस में आना केवल किसी ओलम्पियन का किसी पार्टी में शामिल होना मात्र नहीं है बल्कि विनेश फोगट के रूप में महिला सुरक्षा भी वर्तमान में हो रहे व भविष्य में होने वाले चुनावों में एक बड़ा मुद्दा होगा।

खामोश हो गई वंचितों, दलितों, किसानों और आदिवासियों की आवाज

सीताराम येचुरी 1970 के दशक में इमरजेंसी के दौरान खठव में छात्र नेता के रूप में उभरे। वे छात्र संगठन एसएफआई के अध्यक्ष बने और 1975 में इमरजेंसी के दौरान गिरफ्तार भी हुए। येचुरी का राजनीतिक जीवन इस कठिन दौर में आकार लिया, जिसने उन्हें जनसरोकारों और वामपंथी राजनीति की गहरी समझ दी।

सीताराम येचुरी नहीं रहे। उनका निधन 72 वर्ष की आयु में हो गया। भारत में किसानों, आदिवासियों, भूमिहीनों, युवाओं, और श्रमिकों के अधिकारों के लिए लड़ने वाला आवाज खामोश हो गया। येचुरी मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव तो थे ही। ज्योति बसु और बुद्धदेव भट्टाचार्य जैसी वाम विभूतियों के बाद येचुरी भारतीय वामपंथी आंदोलन के निर्विवाद स्तंभ के रूप में उभरे। संसद में येचुरी की पहचान एक प्रभावशाली और जोशीले वक्ता के साथ एक तेज-तर्रार और बेहतरीन तर्कशास्त्री की थी, जिनका सभी दलों के नेता सम्मान करते थे। संवैधानिक और राजनीतिक मामलों पर उनकी पकड़ ने उन्हें सत्तापक्ष के लिए एक चुनौतीपूर्ण प्रतिद्वंदी बना दिया था। सरकार की जवाबदेही को लेकर स्पष्टता, विश्वास और लोकतंत्र के प्रति गहरी जिम्मेदारी से भरे उनके सवाल संसद में सत्ता पक्ष के लिए चुनौती पेश करते थे।

उन्होंने अपने जीवन में वामपंथी आंदोलन को नए आयाम दिए और भारतीय राजनीति में अपनी खास पहचान बनाई। उनकी मृत्यु न केवल उढक(ट) बल्कि पूरे भारतीय वामपंथ के लिए एक अपूरणीय क्षति है। येचुरी के निधन के साथ भारतीय राजनीति के एक युग का अंत हो गया, जिसने दशकों तक समाजवाद, समानता और सामाजिक न्याय की दिशा में कार्य किया।

सीताराम येचुरी का जन्म 12 अगस्त 1952 को मद्रास (अब चेन्नई) में एक तेलुगु ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता सर्वेश्वर सोमयाजुला येचुरी एक इंजीनियर थे और मां कल्पकम येचुरी एक सरकारी अधिकारी थीं। येचुरी ने नई दिल्ली के प्रेसिडेंट्स एस्टेट स्कूल से सीबीएसई बोर्ड की उच्चतर माध्यमिक परीक्षा में अखिल भारतीय प्रथम रैंक प्राप्त की और सेंट स्टीफन कॉलेज, दिल्ली से अर्थशास्त्र में बी.ए. (ऑनर्स) की डिग्री हासिल की। इसके बाद उन्होंने खठव से अर्थशास्त्र में एम.ए. किया, जहां उनके राजनीतिक जीवन की शुरूआत हुई। येचुरी 1970 के दशक में इमरजेंसी के दौरान खठव में छात्र नेता के रूप में उभरे। वे छात्र संगठन एसएफआई के अध्यक्ष बने और 1975 में इमरजेंसी के दौरान गिरफ्तार भी हुए। येचुरी का राजनीतिक जीवन इस कठिन दौर में आकार लिया, जिसने उन्हें जनसरोकारों और वामपंथी राजनीति की गहरी समझ दी। सीताराम येचुरी ने भारतीय वामपंथी आंदोलन और भारतीय राजनीति में कई महत्वपूर्ण योगदान दिए।

प्रयागराज में सीखा था फिरोज गांधी ने राजनीति का ककहरा

मुंबई के पारसी परिवार में 12 सितंबर 1912 को फिरोज जहांगीर गांधी का जन्म हुआ था। साल 1920 में पिता की मृत्यु के बाद फिरोज अपनी मां रतिमाई के साथ मुंबई से प्रयागराज आ गए। प्रयागराज में वह अपनी मौसी शिरिन कमिसारीट के पास रहने लगे थे। फिरोज गांधी पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के पति थे। वह पारसी राजनेता तथा पत्रकार थे। इसके अलावा वह लोकसभा के सांसद भी रहे। फिरोज ने राजनीति का कहहरा प्रयागराज से सीखा था। उनका असली नाम फिरोज घांदी था।

मुंबई के पारसी परिवार में 12 सितंबर 1912 को फिरोज जहांगीर गांधी का जन्म हुआ था। साल 1920 में पिता की मृत्यु के बाद फिरोज अपनी मां रतिमाई के साथ मुंबई से प्रयागराज आ गए। प्रयागराज में वह अपनी मौसी शिरिन कमिसारीट के पास रहने लगे थे। फिरोज की मौसी डफरिन अस्पताल में सर्जन थीं। साल 1930 में जब फिरोज गांधी ईसीसी में पढ़ते थे, तब कांग्रेस के स्वतंत्रता सेनानियों की ओर से गठित वानर सेना ने कॉलेज के बाहर प्रदर्शन किया था।

इस प्रदर्शन के दौरान पहली बार यहीं पर फिरोज इंदिरा गांधी और कमला नेहरु से मिले थे। अत्यधिक गर्मी के कारण कमला नेहरु बेहोश हो गईं, जिस पर फिरोज ने उनकी मदद की थी। इस प्रदर्शन के अगले दिन फिरोज ने पढ़ाई छोड़कर भारत के स्वतंत्रता संग्राम में जुड़ने की प्रेरणा ली। जिसके बाद वह अक्सर आनंद भवन जाते रहते थे, इस दौरान उनकी इंदिरा गांधी से नजदीकियां बढ़ने लगीं। जब साल 1933 में फिरोज ने कमला नेहरु के सामने इंदिरा से शादी करने की इच्छा जाहिर की। जबकि उस दौरान इंदिरा की उम्र 16 साल थी। इंदिरा और फिरोज की शादी से पंडित नेहरु खुश नहीं थे। पंडित नेहरु के इस रिश्ते से खुश न होने का कारण था कि फिरोज पारसी थे और इंदिरा गांधी कश्मीरी ब्राह्मण। वहीं दोनों की उम्र में भी काफी अंतर था। हालांकि महात्मा गांधी के हस्तक्षेप के बाद पं. नेहरु की इजाजत के साथ 26 मार्च 1942 को आनंद भवन में शादी हुई। इंदिरा और फिरोज की शादी में महात्मा गांधी भी शामिल हुए थे।

विवाह के बाद भारत छोड़ो आंदोलन के समय इंदिरा और फिरोज एक साथ जेल गए। इंदिरा और फिरोज को नैनी जेल में बंद किया गया था। वहीं अगले 5 सालों में राजीव और संजय गांधी का जन्म हुआ। देश की आजादी के बाद इंदिरा और फिरोज अपने दोनों बच्चों के साथ प्रयागराज में रहने लगे। फिर वह पं. नेहरु द्वारा स्थापित नेशनल हेराल्ड के निदेशक के रूप में काम करने लगे।

बता दें कि साल 1952 और 1957 में फिरोज गांधी रायबरेली से चुनाव जीते। लेकिन साल 1958 में दिल का दौरा पड़ने के कारण वह बीमार रहने लगे। वहीं 08 सितंबर 1960 को फिरोज गांधी का निधन हो गया था। वहीं अंतिम संस्कार के बाद फिरोज गांधी की अस्थियां मम्फोर्डगंज स्थित पारसी कब्रिस्तान में पारसी रीति से दफनाई गई थी।

घूँघट की बगावत

15 सितम्बर 2024

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित
हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

राहुल गाँधी के आरक्षण खत्म करने की बात के झांसे में ना आए सवर्ण

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी ने अमेरिका के तीन दिनों के इस दौरे के पहले दिन यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास में अपने संबोधन के दौरान नेता प्रतिपक्ष के तौर पर अपनी भविष्य की योजनाओं पर भी खुलकर बात की। उन्होंने कहा कि जरुरत पड़ने पर आरक्षण समाप्त कर सकते है। लोकसभा चुनाव में भारतीय राजनीति में प्यार, सम्मान और विनम्रता के मूल्यों को कायम रखने वाले नरेंद्र मोदी को तीसरी बार सत्ता मिलना भारतीय लोकतंत्र की ताकत को दिखाता है। मुझे लगता है कि मोदी सा भाव मौजूदा समय में हमारी राजनीतिक प्रणाली में विपक्ष से गायब है। विपक्ष चिल्लाता रहा सरकारी एजेंसियों का दुरुपयोग हुआ सदन से ना सिर्फ हंगामा हुआ अपितु राहुल की सदस्यता भी खत्म की गई जो विपक्ष के उद्दंडता को दिखाता है । राहुल गांधी ने अमेरिका में पत्रकारों से संवाद करते हुए कहा की ₹भारत में जब वास्तव में सभी लोगों को बराबर का अधिकार और हिस्सेदारी मिलेगी तब आरक्षण की जरूरत ही नहीं पड़ेगी और इसे खत्म कर दिया जाएगा। अब आप बताइए इसमें क्या गलत है ? लेकिन देश के सारे निर्लज्ज नेता एक साथ मिल कर इसका विरोध नहीं कर रहें क्यूंकि देश भर में झूठ फैलाने का ठेका राहुल ने लिया है। राहुल गांधी ने आरक्षण खत्म कर देंगे बोला है पर ना नौ मन तेल होगा ना....। इस देश में झूठ ऐसा फैलता है की आम जनमानस इसमें यकीन कर फंस जाते हैं। ये बिलकुल वैसा ही है जब कुछ दिन पहले संसद सत्र के दौरान इन निर्लज्जों विपक्ष ने यह झूठ फैलाया था की बीजेपी आरक्षण खत्म करेंगी। राहुल गांधी ने कहा है की हिंदू हिंसक होते हैं। अब अमेरिका में कह रहें कि सिक्खों को गुरुद्वारे में पगड़ी पहन कर नहीं जाने दिया जाता। हद है झूठ की। वह व्यक्ति जो देश को बाटने के लिए 'जातिगत जनगणना' को मुद्दा बना रहा , जो अब भी लगातार इस विषय को उठाए हुए है, क्या वह यह बोलेगा की कांग्रेस को भारत से खत्म कर दो ? नहीं तो अब वह बोल रहा कि आरक्षण खत्म कर दो ताकि अब सवर्ण झांसे में आ जाए। मुझे लगता है जनता को मूर्ख समझने की इन नेताओं की हरकतें उन्हें बहुत भारी पड़ेगी। जनता इसका जवाब आगामी चुनावों में तो देगी ही, जनता दौड़ा दौड़ा कर इनके जुलूस भी निकालेगी और न्याय यात्रा भी। जनता इनकी मोहब्बत की फर्जी दुकान यूँ ही बंद कराती रहेगी।

पंकज सीबी मिश्रा,
जौनपुर यूपी

गोवंश के हित मे पुनीत पहल का स्वागत करें

बेसहारा गोवंश से मुक्त होंगे हाईवे,किनारे बनेंगी गोशालाएं के सम्बंध में समाचार पत्रों में खबर पढ़ी।माननीय मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के निर्देश पर बन रही योजना। हर पांच किमी के दायरे में टीन शेड का बाड़ा, चबूतरा बनेगा नेशनल हाइवे पर गोवंश से दुर्घटनाओं के मामलों को देखते हुए एन एच आइ ने जिला प्रशासन के साथ मिलकर रेस्क्यू दल और काऊ कैचिंग व्हीकल की मदद से सुरक्षा प्रदान की जाएगी।इसके अलावा गले मे रेडियम बेल्ट व सींग पर रेडियम लगाया जाएगा।देखा जाए तो गौ -संरक्षण एवं संवर्धन के तहत गौ रक्षा पालन संवर्धन हेतु सामाजिक धार्मिक संस्थाएं एवं सेवा भावी लोग लगातार संघर्षरत हैक्योकि गाय हमारी माता है एवं गौ रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है।वर्तमान बजट में भी गोवंश के लिए एक सराहनीय बजट रखा उसके पूर्व प्रदेश मे गोवंश वध रोकने के लिए प्रदेश सरकार की पहल भी प्रशंसनीय है।अब गोवंश के अवैध परिवहन में लगे वाहनों को कलेक्टर राजसात कर सकेंगे।अवैध परिवहन वालो पर संशोधित अधिनियम के तहत कार्रवाई भी की जावेंगी।आवारा शब्द पर पिछले वर्ष गाय के हित मे राजस्थान में ये पहल की गई थी कि गाय को अब आश्रयहीन कहा जायेगा ।जयपुर नगर निगम सेंटर प्रशासन ने प्रशंसनीय निर्णय लिया है इस तरह आश्रयहीन अथवा बेसहारा बोले जाने का निर्णय हर जगह इस्तेमाल होना चाहिए। देखा जाए तो विदेशों में तो गाय को गले लगाने का चलन जोरों पर चल रहा है इसके द्वारा वे स्वयं को तनाव ,अवसाद मुक्त होकर स्वस्थ महसूस कर रहे है इस प्रयोग के लिए वे हजारों रुपये खर्च कर रहे है।

संजय वर्मा 'दृष्टि'
मनावर जिला धार मप्र

भारत में आत्महत्या रूपी महामारी से निपटने हेतु उपाय खोजने की फौरी जरूरत है। इसका हल केवल सतही उपाय करने में निहित नहीं है। हमारी व्यवस्था में व्याप्त दोषों को ठीक करने के लिए बहुआयामी और वास्तविक प्रयास जरूरी हैं, इससे नीचे कुछ भी कीमती जानें नहीं बचा सकता। ऐसे देश में जहां बड़ी संख्या में लोग अभी भी देसी उपचारों से अपनी स्वास्थ्य समस्याओं का इलाज करने की कोशिश करते हैं, वहां मानसिक स्वास्थ्य समस्या से जूझ रहे व्यक्ति के लिए मनोचिकित्सक से परामर्श पाने की संभावना नगण्य है।

मुद्दों का हल निकालना आत्महत्याएं रोकने में पहला कदम

आत्महत्या से होने वाली मौतों में दो तिहाई हिस्सा न्यूनतम आय वर्ग के लोगों का है। इसके अलावा, वर्ष 2022 में किसानों और खेतीहर मजदूरों ने 11,290 खुदकुशी की। अपने वजूद और सुख के लिए आधारभूत आवश्यकताएं रोटी, कपड़ा और मकान हैं। नीति आयोग के अनुसार, 50 प्रतिशत भारतीयों की औसत मासिक क्रय शक्ति, क्रमशः ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में, 3,094 रुपये और 4,963 रुपये है। ग्रामीण और शहरी आबादी के निचले 20 प्रतिशत में आने वाले लोगों के पास खुद के वास्ते और परिवार को जिंदा रखने के लिए दैनिक खर्च क्षमता महज 70-100 रुपये है। इतने कम पैसे में भोजन, कपड़ा और मकान का इंतजाम कर लेना बेहद मुश्किल है।

आत्महत्या से होने वाली प्रत्येक मौत के बरक्स 200 से ज्यादा लोग आत्महत्या करने की प्रवृत्ति और विचार पाले हुए हैं। चिंताजनक बात यह है कि वैश्विक औसत की तुलना में भारतीय महिलाओं की खुदकुशी दर दोगुनी है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक, 2021 में हर दिन औसतन 86 बलात्कार के मामले दर्ज किए गए। यह संख्या असल से बहुत कम हो सकती है, क्योंकि अधिकांश पीड़ित महिलाएं लोकलाज आदि के डर से मामला दर्ज करवाने नहीं जातीं। महिलाओं का एक बड़ा हिस्सा शारीरिक-मानसिक शोषण और उत्पीड़न का शिकार होता है, तिस पर व्यवस्था से सुनवाई की उम्मीद बहुत कम है।

खेती से मोहभंग और शहरी जीवन की चकाचौंध से ग्रस्त होकर, ग्रामीण युवा पलायन के मौके की तलाश में रहते हैं, जिससे वे भारी संख्या में बड़े शहरों का रुख करते हैं। शहरीकरण तनावों को बढ़ाता है- जीवनयापन की उच्च लागत, जिंदगी की तेज रफ्तार, सफलता प्राप्ति का दबाव और दुनिया में पैर जमाने का संघर्ष। परिवार और समुदाय की सुरक्षा छतरी सिर पर नहीं रहने से व्यक्ति में असुरक्षा बोध पैदा होता है। असफल होने वाले बहुत से लोग वहीं फंसकर रह जाते हैं, गांव वे लौटना नहीं चाहते, और शहर में कुछ पल्ले नहीं पड़ता। दुनिया में कहीं और की अपेक्षा भारत में लोग अधिक आत्महत्या कर रहे हैं। वर्ष 2016 में भारत में प्रति एक लाख लोगों पर आत्महत्या की दर 16.5 रही, जबकि वैश्विक औसत 10.5 थी। यहां सवाल स्वाभाविक है कि लोगों को अपनी जान लेने की तरफ क्या चीज धकेलती है? क्या आत्महत्या की व्याधि एक व्यक्तिगत घटना है या हमारी सामाजिक, प्रशासनिक, आर्थिक, शैक्षणिक और धार्मिक व्यवस्था को आगे आकर इसकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए? मानसिक रोग, ड्रग्स की लत, तलाक, असफल प्रेम संबंध, यौन हिंसा, दिवालियापन, शैक्षणिक विफलता, बेरोजगारी और गरीबी खुदकुशी करने के मुख्य कारण हैं। इनके अलावा दक्षिण एशियाई देशों में एक और वजह है : समाज में इज्जत को ठेस। भारत में उच्च आत्महत्या दर की वजहों की, विशेषकर समाज के कुछ खास वर्गों में, जांच की जानी चाहिए। विश्व खुशहाली रिपोर्ट-2024 में भारत को 143 देशों में 126वां स्थान मिला है, यह पड़ोस के पाकिस्तान और नेपाल से भी नीचे है। तो भारत में इतने सारे लोग दुखी क्यों हैं? सामान्य कारकों के अलावा, भारत में आत्महत्या के ग्राफ में एक अजीब सी समानता भी है- युवा, निम्न आय वर्ग, किसान और महिलाओं में आत्महत्या की दर ज्यादा है। 15 से 29 आयु वर्ग, जो भारत की जनसंख्या का 53.7 प्रतिशत है, उसमें मौत के कारणों में आत्महत्याओं का हिस्सा काफी अधिक है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की 2020 रिपोर्ट बताती है, उस साल हर दिन 35 से अधिक छात्रों ने आत्महत्या की। इस वर्ष कोटा में अब तक 13 छात्र यह अतिशयी कदम उठा चुके हैं, जबकि पिछले साल देश के इस कोचिंग के गढ़ में 26 छात्रों ने खुदकुशी की थी। गला-काट प्रतिस्पर्धा, उच्च प्रदर्शन का दबाव और असफलता का डर जिसको कभी-कभी माता-पिता का अधीर रवैया भी हवा देता है- युवा मानस के लिए इनको संभालना बहुत मुश्किल हो सकता है। नौकरी के चाहवान बहुत हैं और नौकरियां अत्यंत कम। लगभग 10 प्रतिशत भारतीय युवा बेरोजगार, नाखुश, चिंतित हैं और उनके पास अपनी रोजमर्रा की जरूरतें तक पूरा करने के लिए संसाधन नहीं हैं। रोजगार के मामले में महिलाएं पुरुषों से काफी पीछे हैं। बहुत बड़ी संख्या में नौकरी के चाहवानों के लिए न सिर्फ नौकरियां बहुत कम हैं, बल्कि निष्पक्ष और योग्यता आधारित भर्तियों की भी कमी है, जिससे आक्रोश और अरुचि उत्पन्न होती है। राजस्थान लोक सेवा आयोग के पेपर लीक और परिणामों में हेराफेरी को लेकर चल रही कानूनी कार्रवाई के कारण पिछले चार वर्षों में कई परीक्षाएं रद्द करनी पड़ी हैं। अन्य राज्य भी इसी किस्म की स्थिति से त्रस्त हैं।

दरअसल, हमारी शिक्षा प्रणाली में कुछ गंभीर गड़बड़ी है। आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 के अनुसार, केवल 51.25 प्रतिशत युवा ही रोजगार के लायक माने जाते हैं। यानी दो में से एक युवा अभी भी कॉलेज से सीधे कार्यबल की योग्यता लायक तैयार नहीं है। उच्च शिक्षा में दाखिला बढ़ा है, लेकिन अधिकांश छात्रों में आलोचनात्मक सोच, दृढ़ता आदि की कमी है। नशे की लत, हिंसा, अपराध, अवसाद और आत्महत्या अधिकतर बेरोजगारी के कारण पैदा हुई निराशा के परिणामवश है। रोजाना 100 रुपये से कम पर गुजारा करने वाले संघर्षशील युवा के लिए सोशल मीडिया अमीरों की दुनिया में झांकने का मौका देता है, जिससे उनके अंदर भी शानदार कारें और महंगे फोन की ख्वाहिशें जगती हैं। आकांक्षाएं बढ़ रही हैं, लेकिन नौकरियां और अवसर कम हैं। हसरतों और हकीकत के बीच का अंतर संभालना मानव मस्तिष्क के लिए बहुत मुश्किल बन जाता है। ऐसे देश में जहां चोटी के एक प्रतिशत अमीरों के पास कुल संपत्ति का 40 प्रतिशत से अधिक हिस्सा हो और निचले तबके के आधों के पास कुल संपत्ति का महज 3 फीसदी हिस्सा, वहां संसाधनों तक पहुंच में चौंका देने वाला अंतर स्पष्ट है।

भारत में आत्महत्या रूपी महामारी से निपटने हेतु उपाय खोजने की फौरी जरूरत है। इसका हल केवल सतही उपाय करने में निहित नहीं है। हमारी व्यवस्था में व्याप्त दोषों को ठीक करने के लिए बहुआयामी और वास्तविक प्रयास जरूरी हैं, इससे नीचे कुछ भी कीमती जानें नहीं बचा सकता। ऐसे देश में जहां बड़ी संख्या में लोग अभी भी देसी उपचारों से अपनी स्वास्थ्य समस्याओं का इलाज करने की कोशिश करते हैं, वहां मानसिक स्वास्थ्य समस्या से जूझ रहे व्यक्ति के लिए मनोचिकित्सक से परामर्श पाने की संभावना नगण्य है। मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के प्रति जागरूकता का अभाव, अपर्याप्त चिकित्सा सुविधाएं और ऐसी समस्याओं से जुड़ी सामाजिक कलंक की सोच एक भंवर बना देते हैं। इन **मुद्दों का हल निकालना आत्महत्याएं रोकने में पहला कदम** हो सकता है, इसके बाद आता है सबसे अधिक जोखिम वाले वर्ग की ओर ध्यान केंद्रित करना।

शेख हसीना का रहस्योद्घाटन चौंकाता कम चिन्तित ज्यादा

इस लम्बी योजना में भारत के पूर्व में ईसाई देश अमेरिका के लिए हितकारी हो सकता है। 1947 में भारत के पश्चिम में बनाया गया पाकिस्तान आज तक अमेरिका के हितों की प्रत्यक्ष-परोक्ष स्वार्थ सिद्धि कर ही रहा है। जब पाकिस्तान (बांग्लादेश समेत) अमेरिकी हितों से कन्नी कतराने की कोशिश करता है तो अमेरिका वहां की सरकारें बदल देता है। नए ईसाई देश की योजना के अमेरिकी षड्यंत्र को शेख हसीना के इस कथन को ध्यान में रखते हुए देखना होगा। कुकी व मैतेयी समुदायों की आपस में बातचीत से मणिपुर समस्या हल होगी।

मिजोरम के निवासी जो भी कुकी समाज का हिस्सा ही माने जाते हैं। इसका अर्थ हुआ कि मिजोरम और मणिपुर में मैतेयी बहुल इम्फाल घाटी को छोडकर शेष सारा मणिपुर कुकी समुदाय का इलाका माना जाता है। मिजोरम और मणिपुर के पड़ोस में म्यांमार लगता है। म्यांमार का काचिन प्रदेश कुकी बहुल प्रदेश है। इस काचिन प्रदेश को म्यांमार से अलग करने के लिए विद्रोही समय समय पर आघात करते रहते हैं। मणिपुर में कुकी विद्रोह से पहले म्यांमार का काचिन प्रदेश विद्रोहियों के कब्जे में आ गया था। उसके बाद ही मणिपुर में गड़बड़ शुरू हुई। दरअसल म्यांमार में पहाड़ी क्षेत्र में पिछले कई सालों से अलगाववादी आंदोलन चल रहा है। पहाड़ी क्षेत्र में अंग्रेजों के शासन काल में ही विदेशी ईसाई मिशनरियां सक्रिय हो गई थीं। अब तक उन्होंने पूरे पहाड़ी क्षेत्र की जनजातियों को मतांतरित करके ईसाई बना लिया है। इन मतान्तरित क्षेत्रों में चिन/कुकी बहुल चिन प्रदेश भी शामिल हैं। वहां से कुकी निरन्तर मणिपुर में आते जाते रहते हैं। पूर्व की कांग्रेस सरकार ने सत्ता गंवाने से ठीक पहले कुकी बहुल क्षेत्र की पहचान को पुख्ता व स्पष्ट स्थापित करने के लिए पूरे मणिपुर का नक्शा ही बदल दिया था। उसने अनेक जिलों को इस प्रकार विभाजित किया ताकि कुकी बहुल जिलों का निर्माण किया जा सके। इसी प्रकार बंग्लादेश के चिटागांव से कुकी विद्रोही आघात प्रत्याघात करते रहते हैं। इसमें एक दूसरा तथ्य भी ध्यान में रखना होगा। मिजोरम, मणिपुर, चिटागांव और म्यांमार के चिन प्रदेश के कुकी शत-प्रतिशत अपनी विरासत छोडकर ईसाई मत में जा चुके हैं। मणिपुर-मिजोरम-चिटगांव-चिन क्षेत्र के कुकी समाज को कुकी-जो-चिन के नाम से भी जाना जाता है। दरअसल अंग्रेज भारत से जाने के पहले 1947 में ही भारत को घेरने की योजना पर काम कर रहे थे।

अमेरिका चीन और भारत दोनों पर नजर रखना चाहता है। चीन भी आर्थिक क्षेत्र में अमेरिका को टक्कर देने की दिशा में बढने का प्रयास कर रहा है। लेकिन भारत का मामला उससे भी पेचीदा है। यह ठीक है कि अमेरिका और भारत की किसी स्तर पर भी समानता नहीं है, लेकिन आज अमेरिका समेत पूरे यूरोप में जो ह्यसभ्यताओं का संघर्षह्ल चला हुआ है उसमें भविष्य में भारत का पलड़ा भारी हो सकता है। इसलिए अमेरिका को राजनीतिक रूप से अस्थिर भारत अनुकूल लगता है। पिछले एक दशक से भारत की राजनीतिक स्थिरता और बहुमत की सरकार सामी सभ्यताओं वाले अमेरिका की आंख की किरकिरी थी। उसे बीसियों विचारधाराओं के दलों की खिचड़ी सरकारें अनुकूल लगती हैं। मणिपुर में मैतेयी और कुकी समुदाय का विवाद काफी लम्बा खिंचता जा रहा है। कुकी विद्रोहियों के हाथ में लूटपाट से भारी मात्रा में हथियार जमा हो गए हैं जिसके कारण हिंसा थम नहीं रही है।

अभी तक इस विवाद को स्थानीय विवाद समझ कर विपक्ष हल्ला गुल्ला करता रहता है। लेकिन पिछले दिनों बांग्लादेश की अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना ने कुछ स्पष्ट बातें कही थीं जिसकी दुनिया भर में चर्चा हो रही थी। उनका कहना था कि अमेरिका ने बांग्लादेश में कुछ देश विरोधी ताकतों को उनके पद से हटाया है। लेकिन उनके अनुसार अमेरिका बांग्लादेश से सेंट मार्टिन नामक टापू लीज पर मांग रहा था और वह ऐसा करने के लिए तैयार नहीं थीं। इसलिए अमेरिका ने सारी साजिश रची।

शेख हसीना के इस रहस्योद्घाटन की देश-विदेश में खूब चर्चा हुई। लेकिन इसके साथ पूर्व प्रधानमंत्री ने एक दूसरा रहस्योद्घाटन भी किया। उसके अनुसार अमेरिका चिटगांव, भारत के कुकी बहुल इलाकों और म्यांमार के कुकी बहुल काचिन प्रदेश को मिला कर पूर्वोत्तर भारत में एक ईसाई देश का गठन करने का प्रयास कर रहा है। आश्चर्य है कि विदेशी मीडिया ने शेख हसीना के इस पदार्फाश की अवहेलना की, लेकिन उससे भी बड़ा आश्चर्य यह है कि भारत का मीडिया भी इस विषय पर एकदम से खामोशी का शिकार हो गया। पूर्वोत्तर भारत के कुकी बहुल इलाके कौनसे हैं? उनमें सबसे पहले तो मणिपुर का विशाल पर्वतीय क्षेत्र है जहां कुकी समुदाय का बाहुल्य है। मणिपुर का पड़ोसी प्रदेश मिजोरम है।

पूर्वोत्तर भारत में एक ईसाई देश बनाने की योजना थी जिसे कूपलैंड योजना कहा जाता था और पश्चिमोत्तर भारत में एक मुसलमान देश बनाने की योजना थी जिसे जिन्ना योजना कहा जाता था। जिन्ना योजना तो पश्चिमोत्तर भारत की राजनीति का हिस्सा बन गई, लेकिन कूपलैंड योजना में अभी ब्रिटिश साम्राज्यवादी रंग भर ही रहे थे कि द्वितीय विश्व युद्ध का अन्त हो गया और अंग्रेजों को इस योजना को अधूरी छोड़ कर जाना पड़ा।

असम के उस समय के राज्यपाल राबर्ट नायल राईड्स ने 1941 में ही शिलांग की एक गोपनीय बैठक में इस योजना का खुलासा करते हुए कहा था कि ह्यबर्मा के काचिन क्षेत्र और भारत के पूर्वोत्तरीय पहाड़ी क्षेत्र को अलग करके ऐसा नया देश बनाने की योजना है जिस पर इंग्लैंड का शासन होह्ल अंग्रेज जानते थे कि जिन्ना योजना से पैदा होने वाले देश पाकिस्तान पर वे प्रत्यक्ष शासन नहीं कर पाएंगे। वहां तो रणनीतिक सांझेदारी ही हो सकती है। लेकिन बर्मा और भारत के एक हिस्से को काट कर बनाए गए नए ईसाई देश को वे अपना उपनिवेश बना सकेंगे। लेकिन भारत की पूर्वोत्तर सरहद पर नया देश बनाने की इच्छा पूरी होने से पहले ही अंग्रेजों को यहां से जाना पड़ा। अब इस पृष्ठभूमि में **शेख हसीना का रहस्योद्घाटन चौंकाता कम चिन्तित ज्यादा** करता है। सबसे पहले तो यहीं से शुरू करना होगा कि लगभग एक दशक पहले कांग्रेस सरकार ने मणिपुर में कुकी क्षेत्रों को चिन्हित करते हुए नए जिले क्या कुकी क्षेत्रों को मणिपुर से अलग करने के लिए ही गठित किए थे? इसमें तो कोई शक नहीं कि बर्मा के काचिन क्षेत्र में कुकी समुदाय के लोगों को ईसाई बनाने के काम में लगी मिशनरियों को अमेरिका से धन ही नहीं, अन्य प्रकार की सहायता भी मिल रही है। लेकिन एक प्रश्न जरूर पूछा जा सकता है कि अमेरिका को इस नए ईसाई देश से क्या फायदा होगा? जिस प्रकार अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में बदलाव होता रहता है, उसी परिप्रेक्ष्य में विभिन्न देशों के स्वार्थ और रिश्ते बदलते रहते हैं।

आज अमेरिका चीन और भारत दोनों पर नजर रखना चाहता है। चीन भी आर्थिक क्षेत्र में अमेरिका को टक्कर देने की दिशा में बढने का प्रयास कर रहा है। लेकिन भारत का मामला उससे भी पेचीदा है।

यह ठीक है कि अमेरिका और भारत की किसी स्तर पर भी समानता नहीं है, लेकिन आज अमेरिका समेत पूरे यूरोप में जो सभ्यताओं का संघर्ष चला हुआ है उसमें भविष्य में भारत का पलड़ा भारी हो सकता है। इसलिए अमेरिका को राजनीतिक रूप से अस्थिर भारत अनुकूल लगता है। पिछले एक दशक से भारत की राजनीतिक स्थिरता और बहुमत की सरकार सामी सभ्यताओं वाले अमेरिका की आंख की किरकिरी थी। उसे बीसियों विभिन्न विचारधाराओं के दलों की खिचड़ी सरकारें अनुकूल लगती हैं जिनसे आसानी से स्वार्थ सिद्धि की जा सकती है।

नए किस्म की चुनौतियां

बीते कुछ वर्षों में विशेष रूप से भारत में आपदा प्रबंधन अधिनियम लागू होने के बाद बुनियादी ढांचों की सुरक्षा पर तेजी से काम शुरू हुआ है लेकिन इसका स्वरूप फिलहाल आपदा केंद्रित ज्यादा है। समस्या के न्यूनीकरण की दिशा में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र को अलबत्ता बेहतर तवज्जो दी गई है लेकिन सार्वजनिक परिवहन प्रणाली के क्षेत्र में अभी काफी कुछ किया जाना चाहिए। भारत में रेल जीवन रेखा जैसी अहमियत रखती है। तकरीबन साढे तेरह हजार ट्रेनें हर दिन ढाई लाख यानी लगभग एक ऑस्ट्रेलिया के बराबर लोगों को उनके गंतव्य तक पहुंचाने के अलावा 33 लाख टन माल की ढुस्लाई भी करती हैं। बीते कुछ वर्षों में भारत में हवाई यात्रा ढांचे का भी तेजी से विकास हुआ है लेकिन यह रेलवे का विकल्प नहीं बन सकता। भारत में रेल पटरियों की लंबाई एक लाख पंद्रह हजार किमी. तक विस्तारित है और इन ढांचों की विरासत वर्ष 1853 तक पहुंचती है जब भारत में पहली ट्रेन चली थी। स्वाभाविक रूप से इतनी महत्वपूर्ण जीवन रेखा को सुरक्षित रखना सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। इसमें कोई दो राय नहीं कि रेल मंत्रालय ने इस क्षेत्र में लगातार काम किया है। इसका एक बड़ा प्रमाण रेल दुर्घटनाओं की संख्या में लगातार होने वाली कमी है। बमुश्किल एक दशक पहले तक लगभग 60 फीसद ट्रेन दुर्घटनाएं रेल पटरियों पर गड़बड़ियों के चलते होती थीं पर इसमें भी काफी कमी आई है लेकिन बेहतरी की इस रफ्तार को और अधिक बेहतर करने की जरूरत है।

दरअसल रेल पटरियों पर बोझ जरूरत से ज्यादा है। आजादी के बाद से अब तक रेल नेटवर्क में लगभग तीस फीसद की बढ़ोतरी हुई है लेकिन इसी अवधि में यात्री भार में 1344 फीसद की बढ़ोतरी हुई है और माल ढुलाई का बोझ 1642 फीसद तक बढ़ गया है। विशेषज्ञों के आकलनों के मुताबिक भारत में हर साल रेल पटरियों के नवीनीकरण का कार्य अपने लक्ष्य के साठ फीसद तक ही पहुंच पा रहा है जो पर्याप्त नहीं है। ऐसी बुनियादी समस्याओं के साथ तोड़फोड़ आतंकी या देश-विरोधी तत्वों द्वारा समय-समय पर की जाने वाली साजिश इस अहम बुनियादी ढांचे की सुरक्षा के लिए नये किस्म की चुनौतियां पैदा कर रही हैं। ॥ कालिंदी एक्सप्रेस हादसे की जगह पर बारूद की बरामदगी और अच्छीझखासी दूरी तक रेलवे पटरियों के समानांतर पेट्रोल गिरा होने की खबरें बेहद चिंताजनक हैं। घटनास्थल से मात्र तीन सौ मीटर की दूरी पर पेट्रोल पंप की मौजूदगी गहरी साजिश और इसके सफल होने के बाद पैदा होने वाले घातक परिणामों का अंदाजा लगाने के लिए पर्याप्त है। ऐसी घटनाओं के सबक बहुत महत्वपूर्ण हैं। रेल पटरियों की निगरानी की मौजूदा व्यवस्थाओं को और अधिक बेहतर करने और नवीन तकनीकों का इस्तेमाल करने की आवश्यकता है। इसके अलावा जमीनी तौर पर नवाचारी कदम उठाने की भी जरूरत है। यह सब तभी संभव हो सकता है जब हम अहम बुनियादी ढांचों की सुरक्षा पर अपनी प्राथमिकताओं का पुनर्निर्धारण करें।

सितम्बर 8 तारीख को कानपुर के पास कालिंदी एक्सप्रेस के एक सिलिंडर से टकराने की दुर्घटना जान-माल के नुकसान के नजरिए से भले महत्वपूर्ण न हो लेकिन इसने देश में क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर सिक्योरिटी (सीआईएस) जैसे बेहद महत्वपूर्ण लेकिन आम तौर पर उपेक्षित मुद्दे को बार फिर से विमर्श के केंद्र में ला दिया है। यह उन नीतिझनिर्धारकों और नियामकों के लिए भी पुनर्विचार का विषय है जो आम तौर पर आधारभूत ढांचे की सुरक्षा को साइबर सुरक्षा का पर्याय मानने लगे हैं।

कालिंदी एक्सप्रेस की घटना इसलिए भी ध्यान खींचती है कि बीते एक महीने में केवल उत्तर प्रदेश में ही यह इस तरह की तीसरी घटना है। इससे पूर्व 16 अगस्त को कानपुर के पास साबरमती एक्सप्रेस के बोल्डर से टकरा जाने के कारण 22 कोच पटरी से उतर गए थे। दावा किया गया था कि ये बोल्डर रेल पटरियों से बांधे गए थे। 24 अगस्त को फरूर्खाबाद और कासगंज के बीच पैसेंजर ट्रेन पटरियों पर रखे लकड़ी के बड़े टुकड़े से टकरा गई थी। संयोग ही कहा जाएगा कि तीनों हादसों में जनधन की क्षति नहीं हुई। हालांकि संभावनाएं प्रचुर थीं। भारत में दुर्भाग्य से आपदा प्रबंधन संबंधी पहल या सुरक्षा संरक्षण संबंधी विमर्श तब तक स्थगित रहते हैंङ्क जब तक कि कोई दुर्घटना बड़ी बलि न ले ले वरना कुछ समय की सुर्खियों के अलावा सामान्यतः कोई बड़ी प्रतिक्रिया नहीं होती। जैसा कि इन तीनों घटनाओं के बाद भी दृष्टव्य है। इन सभी घटनाओं में साजिश की संभावनाओं का जिक्र हुआ है और पुलिस के साथ-साथ कुछ मामलों में एटीएस को भी जांच में शामिल किया गया लेकिन यह सिक्के का केवल एक पहलू है। गड़बड़ियों के लिए जिम्मेदारों को खोज कर सजा दिलाने से ज्यादा जरूरी ऐसी घटनाओं की संभावनाओं को क्रमशः शून्य करते जाना है। विकसित देशों विशेष रूप से यूरोपीय देशों में क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर सिक्योरिटी यानी अहम बुनियादी ढांचों की सुरक्षा को लेकर दो दशक में काफी काम हुए हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं में सैन्य खतरों की तुलना में जैसे-जैसे अपरंपरागत खतरों पर ध्यान देना शुरू किया गया है वैसे-वैसे खतरों के नये मोर्चे नुमाया होते जा रहे हैं। एक ऐसे दौर में जब राष्ट्र आमनेझ सामने के युद्धों की बजाय प्रच्छन्न युद्धों का सामना कर रहे हैं आतंकवाद अपने उद्देश्यों के लिए उड़ते जहाज को इमारत से टकरा देने जैसे अकल्पनीय विकल्प चुन रहा हो तो ऐसे समय में बुनियादी ढांचों की सुरक्षा से ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ और नहीं रह जाता।

9/11 के बाद अमेरिका की होमलैंड सिक्योरिटी का प्रारूप इसकी पुष्टि करने के लिए पर्याप्त है। सामान्य रूप से अहम बुनियादी ढांचे से अभिप्राय उन सुविधाओं परिसंपत्तियों या प्रणालियों से है जो किसी देश की सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा के नजरिए से महत्वपूर्ण होते हैं उनमें आई कोई गड़बड़ी सार्वजनिक सुरक्षा स्वास्थ्य आर्थिक स्थिरता सबको एक साथ प्रभावित कर देती है। ऊर्जा रासायनिक नेटवर्क जन स्वास्थ्य पुलिस फायर ब्रिगेड सूचना प्रौद्योगिकी के अलावा सार्वजनिक परिवहन प्रणाली इन अहम बुनियादी ढांचे में शामिल हैं।

पारिस्थितिकी हानि के कुप्रभाव से नदी भी नहीं बच सकती

यमुनोत्री से निकलने वाली जल-धारा जो मैदान में आ कर गंगा की सबसे बड़ी सखी-सहेली कहलाती है पहाड़ से उतरने के पहले ही लुप्त हो जाती है। दिल्ली तक जो भी जल आता है वह अधिकांशतः हरियाणा की छोटी नदियों और कारखानों के उत्सर्जन का हिस्सा होता है।

सावन बात गया भादा भा आधा निकल गया दिल्ला और उसके आसपास यमुना नदी के जल-ग्रहण क्षेत्र कहलाने वाले इलाकों में पर्याप्त पानी बरसा लेकिन न नदी में पानी दिखा और न ही पानी से शहर की मुक्ति। जिस समय नदी में पानी लबालब होना चाहिए था तब कम से कम दो बार दो इसमें अमोनिया की मात्रा अधिक हो गई। कई हजार करोड़ के खर्च ढेरों वादों और योजनाओं के बाद भी लगता नहीं है न कि दिल्ली में यमुना को 2026 तक निर्मल बना देने का लक्ष्य पूरा हो पाएगा। समझना होगा कि यमुना पर लाख एसटीपी लगा कर नालों के पानी को शुद्ध कर लें लेकिन जब तक यमुना में नदी का पानी अविरल नहीं आएगा तब तक इसके हालात तो सुधरने से रहे।

दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) की रिपोर्ट के अनुसार जुलाई में यमुना में ऑक्सीजन की मात्रा शून्य पाई गई जबकि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। यमुना की सफाई के लिए केंद्र सरकार ने दिल्ली सरकार को 8500 करोड़ रु पये दिए लेकिन नतीजा शून्य है। असल में दिल्ली में यमुना को साफ-सुथरा बनाने की जो भी नीति हैं उनका मूल यह है कि दिल्ली में यमुना गंगा और भूजल से 1900 क्यूसेक पानी प्रति दिन प्रयोग में लाया जाता है। इसका 60 फीसद यानी करीब 1100 क्यूसेक सीवरेज का पानी एकत्र होता है। यदि यह पानी शोधित कर यमुना में डाला जाए तो यमुना निर्मल रहेगी और दिल्ली में पेयजल की किल्लत भी दूर होगी। लेकिन हर समय नजरंदाज किया जाता है कि नदी में बाकी जल कहां से आएगा?

ईमानदारी की बात तो यह है कि यमुनोत्री से निकलने वाली जल-धारा जो मैदान में आ कर गंगा की सबसे बड़ी सखी-सहेली कहलाती है पहाड़ से उतरन क पहल हा लुप्त हा जाता ह। दिल्ला तक जा भी जल आता है वह अधिकांशतः हरियाणा की छोटी नदियों और कारखानों के उत्सर्जन का हिस्सा होता है।

बरसात के मौसम के पचहत्तर फीसद दिन बीत जाने के बाद भी दिल्ली में एक भी बार बाढ़ नहीं आई। बाढ़ नदी में जीवन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पहाड़ों से बह कर आया पानी अपने साथ कई उपयोगी लवण लेकर आता है। वहीं नदी के जलझ मार्ग में कूड़े-मलबे के कारण धारा अवरोद्ध होती है बाढ़ उसे स्वतः साफ कर देती है। इस तरह नदी में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है जो मछलियों और जीवों की प्रजातियों को अनुकूल परिवेश प्रदान करती है। दिल्ली में यमुना की शुद्धि के मशीनी उपायों से कहीं ज्यादा जरूरी है कि यहां तसल्ली से बाढ़ आए। आखिर दिल्ली में बाढ़ क्यों नहीं आई? कारण खोज लें तो यह भी समझ आ जाएगा कि मल-जल को साफ करने के उपाय क्यों असफल ही रहते हैं। यमुना की आत्मा सभी नदियों के मानिंद उसके फ्लड प्लेन अर्थात कछार में है। जब नदी यौवन पर हो तो जमीन पर जहां तक उसका विस्तार होता है वह उसका कछार या फ्लड प्लेन है। अब दिल्ली में तो नदी को फैलने की जगह ही नहीं बची। हजारों निजी और सरकारी निर्माण और नदी के बीचोंबीच खड़े किए गए खंभे यमुना को दिल से बहने ही नहीं देते।

सुनिश्चित करने की जरूरत है कि नदी के फ्लड प्लेन को पूरी तरह से खाली रखा जाए। नदियों में आने वाली बाढ़ एक नये जीवन का निर्माण करती है और एक तरह से जरूरी भी है। बाढ़ से नदी का जलीय जीवन भी बेहतर होता है॥। दिल्ली तक यमुना का अवराध चाहन वाल दिल्ला स हारयाणा आर फिर उससे ऊपर पहाड़ तक भी हैं जिनने अवैध बालू खनन के लिए कई-कई जगह नदी के रास्ते रोके हुए हैं या अनैतिक तरीके से इसके मार्ग को ही बदल दिया है ऐसे लोगों की मंशा की पूर्ति के लिए पहाड़ पर ही नदी को बांधने के सरकारी प्रयास भी कम नहीं हैं। देहरादून के कालसी विकास खंड में यमुना नदी पर 204 मीटर ऊंचे बांध की लखवार व्यासी परियोजना 1972 में शुरू हुई। फिर इस पर काम बंद हो गया। 2013 में काम फिर शुरू हुआ और अब यमुना पहाड़ से नीचे उतरने से पहले यहीं घेर ली जाती है। जाहिर है कि जब पहाड़ में ही यमुना का भाव नहीं है तो हथिनी कुंड से वजीराबाद तक यह एक बरसाती नदी ही है। पहाड़ पर इतने बड़े बांध और कई सुरंगों के जरिए पानी के मार्ग को बदलने से महज जलझप्रवाह ही कम नहीं हो रहा है, बल्कि इतने निर्माण का मलबा भी बह कर नीचे आ रहा हैङ्क जो नदी को उथला बना रहा है। दिसम्बर २१ के आखिरी हफ्ते में जब व्यासी जलविद्युत परियोजना की एक टरबाइन को प्रयोग के तौर पर खोला गया तो यमुना की धारा लगभग लुप्त हो गई थी। इससे स्पष्ट हो गया था कि इस परियोजना के कारण दिल्ली तक यमुना का रास्ता अब बंद हो गया है।

जब व्यापक निर्माण के कारण पहाड़ों पर जम कर जंगल काटे जाएं तो पारिस्थितिकी हानि के कुप्रभाव से नदी भी नहीं बच सकती। महज सिंचाई और बिजली के सपने में यमुना हरियाणा में आने से पहले ही हार जाती है। इधर दिल्ली जिस नदी को निर्मल करने के लिए बजट बढ़ाती है। वास्तव में उस नदी का अस्तित्व है ही नहीं।

बढ़ती आबादी इंसान ही नहीं पशु-पक्षियों के आशियानों पर भी खतरा

इन दिनों उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले में भेड़ियों ने आतंक मचा रखा है। भेड़ियों के हमलों में अब तक दस लोगों की जान जा चुकी हैं और करीब तीस लोग घायल हुए हैं। भेड़ियों की दहशत का प्रदेश में यह कोई पहला मामला नहीं है। इससे पहले भी जंगली जानवरों का तांडव रहा है। भेड़ियों के आतंक से निजात पाने के लिएराज्य सरकार ने उन्हें मारने का आदेश जारी किया है। मजे की बात यह है कि मनुष्यों की जान पर संकट बने भेड़ियों का वजूद खुद खत्म होने के कगार पर है। उनके देश में विलुप्त होने का खतरा बाघ से ज्यादा है। पशुओं के शोधकताओं और विशेषज्ञों का मानना है कि जंगली जानवरों में सबसे ज्यादा शमीर्ला जानवर भेड़िया ही है। ये जल्दी मनुष्यों के संपर्क में नहीं आते और न ही इंसानों पर हमला करते हैं। शर्मीली प्रवृत्ति होने के बावजूद भेड़िये इंसानों को क्यों अपना शिकार बना रहे हैं? जंगली जानवर भेड़िया या कोई अन्य जानवर मनुष्यों को बेवजह परेशान नहीं करते। उत्तर प्रदेश का जिला बहराइच तराई का हिस्सा है जो दक्षिणी नेपाल और उत्तरी भारत की सीमा पर फैली दलदली निचली भूमि का हिस्सा है। यहां बरसात में बाढ़ का खतरा बना रहता है। कोई भी जंगली जानवर किसी कारण से मूल प्राकृतिक वास को छोड़ता। भोजन की कमी होती है तब जंगली जानवर भोजन और सुरक्षित वास की तलाश में शहर-कस्बों की ओर बढ़ते हैं। ऐसे में मांसभक्षी जानवर पालतू पशुओं या मनुष्यों को अपना शिकार बनाते हैं। जो शाकाहारी पशु होते हैं वे भी फसलों पर धावा बोलने में पीछे नहीं रहते। घटते जंगल बढ़ती आबादी से न सिर्फ इंसानी जीवन पर दबाव बढ़ रहा है बल्कि पशु-पक्षियों के आश्रय स्थल और भोजन पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। विकास की अंधी होड़ में जंगलों की अंधाधुंध कटाई से जंगली जानवरों के भोजन और मूल निवास सिकुड़ रहे हैं। जंगली जानवरों की मूल प्रवृत्ति में भी बदलाव हो रहा है। भूख और मूल निवास के संकट से जंगली जानवरों में आक्रामकता पहले की अपेक्षा अधिक बढ़ी है। भूख-प्यास से व्याकुल जंगली जानवर शहर-गांवों का रुोख करने लगे हैं। पिछले कुछ वर्षों में जंगली जानवरों का आतंक शहर-गांव-देहात में ज्यादा देखने को मिला है। विशेषज्ञ मानते हैं कि भेड़ियों कुत्तों या कुछ अन्य जानवरों में खास किस्म की प्रवृत्ति होती है। वह यह कि यदि उन्हें एक बार इंसान का खून लग गया तो वे उसके आदी हो जाते हैं। यही वजह है कि बहराइच में भेड़िये मनुष्यों को अपना शिकार बना रहे हैं। उनका तांडव भले ही बहराइच में हो लेकिन इस घटना से पूरा देश सहमा हुआ है। भेड़ियों पर काबू पाने के लिए शासन-प्रशासन कोशिशों में जुटे हैं फिर भी भेड़िये मनुष्यों का शिकार करने से बाज नहीं आ रहे।

भारत में भेड़िया विलुप्त होते वन्यजीवों की श्रेणी में आते हैं। इसलिए देश में इनकी संख्या काफी सीमित है। यह भी हो सकता है कि नेपाल से भोजन या निवास की तलाश में अथवा अन्य वजहों से बहराइच में भेड़िये अपना ठिकाना बना रहे हों। कुछ भी हो लेकिन भेड़ियों के बढ़ते हमलों से देशझप्रदेश के समक्ष चुनौतियां और कई सवाल खड़े हो गए हैं। भेड़िया या अन्य जंगली जानवरों में इंसानों के प्रति प्राणघाती हमलों की प्रवृत्ति क्यों बढ़ रही है? इंसान की आहट से दूर रहने वाले जानवर इंसानों को आहार क्यों बना रहे हैं? क्या जलवायु परिवर्तन से जंगली जानवरों की मूल प्रवृत्ति में बदलाव आ रहा है? क्या कारण हो सकता है जिससे जंगली जानवरों को मनुष्यों पर हमला करना पड़ रहा है। सरकारें मानव बस्तियों के विस्तार और शहरीकरण को बढ़ावा देने के लिए जंगलों को बेतहाशा कटवा रही हैं। मनुष्यों के विकास पर ध्यान दिया जा रहा है लेकिन जंगली जानवरों के प्राकृतिक आवास की अनदेखी करके। जंगलों की अंधाधुंध कटाई और बढ़ते शहरीकरण से जानवरों के प्राकृतिक आवास सिकुड़ रहे हैं। यह समस्या इंसानों के लिए न केवल घातक सिद्ध हो रही है बल्कि जानवरों के अस्तित्व पर भी गंभीर खतरा मंडरा रहा है। हाल में एक अध्ययन से पता चला है कि आने वाले कुछ वर्षों में मानव जनसंख्या वृद्धि के चलते आधे से ज्यादा जानवरों के रहने वाले क्षेत्रों में मनुष्य का कब्जा होगा। स्पष्ट है कि जंगली जानवरों और मनुष्यों के बीच संघर्ष बढ़ जाएगा। दोनों अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ेंगे। जंगली जानवरों की बढ़ती दहशत जटिल समस्या है इसके निदान के लिए समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। सरकार को जंगलों के संरक्षण और जंगली जानवरों के पुनर्वास पर ध्यान देना चाहिए। जंगलों और मानव बस्तियों के बीच स्पष्ट सीमा का निर्धारण करना चाहिए। यह न केवल मानव सुरक्षा का मामला है बल्कि वन्यजीव संरक्षण का भी मुद्दा है। उचित समय पर ठोस रणनीति के साथ कदम नहीं उठाए गए तो समस्या और भी गंभीर हो सकती ह जिससे न केवल जंगली जानवरों की संख्या में कमी आएगी बल्कि मानव जीवन पर भी संकट बढ़ जाएगा। इंसानी जीवन की सुरक्षा के साथ ही जंगली जानवरों की सुरक्षा के इंतजाम भी होने चाहिए। पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के लिए वन्यजीवों के साथ मानव का शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व सुनिश्चित करके ही समस्या का स्थायी समाधान किया जा सकता है।

कांग्रेस को हरियाणा में सपा को सीट देना चाहिए

राहुल को विपक्ष का नेता बनाने में इंडिया गठबंधन' के सभी सहयोगी दलों विशेषकर समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की बड़ी भूमिका रही है। उत्तर प्रदेश से 37 लोक सभा सीट जीत कर अखिलेश यादव ने राहुल गांधी को विपक्ष का नेता बनने का आधार प्रदान किया। आज सपा भारत की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बन गई है। ऐसे में अब राहुल और कांग्रेस पार्टी का नैतिक दायित्व है कि वे भी अखिलेश यादव जैसी उदारता दिखाएं जिसके कारण कांग्रेस को रायबरेली और अमेठी जैसी प्रतिष्ठा की सीटें जीतने का मौका मिला वरना उत्तर प्रदेश में कांग्रेस संगठन और जनाधार के मामले में बहुत पीछे जा चुकी थी। अब महाराष्ट्र और हरियाणा के चुनाव हैं जहां कांग्रेस सबसे बड़े दल की भूमिका में हैं। वहां उसे सपा को साथ लेकर चलना चाहिए और दोनों राज्यों के चुनावों में सपा को भी कुछ सीटों पर चुनाव लड़वाना चाहिए। महाराष्ट्र में तो सपा के दो विधायक अभी भी थे।

हरियाणा में भी अगर कांग्रेस के सहयोग से उसके दोझतीन विधायक बन जाते हैं तो अखिलेश को अपने दल को राष्ट्रीय दल बनाने का आधार मिलेगा। इससे दोनों के रिश्ते प्रगाढ़ होंगे और इंडिया गठबंधन' भी मजबूत होगा। स्वाभाविक सी बात है कि कांग्रेस के कुछ बड़े नेताओं को इस रिश्ते से तकलीफ होगी क्योंकि कांग्रेस और सपा का उत्तर प्रदेश में वोट बैंक एक सा है। ये नेता पुराने ढर्रे पर चल कर सपा के जनाधार पर नजर गढ़ाएंगे पर ऐसी हरकत से दोनों दलों के आपसी संबंध बिगड़ेंगे और बहुत दूर तक साथ चलना मुश्किल होगा। इसलिए ह्यइंडिया गठबंधन' के हर दल को ध्यान रखना होगा कि जिस राज्य में जिस दल का वर्चस्व है वो वहां नेतृत्व संभाले पर साथ ही अपने सहयोगी दलों को भी साथ खड़ा रखे। विशेषकर उन दलों को जिनका उन राज्यों में कुछ जनाधार है। इससे गठबंधन के हर सदस्य दल को लाभ होगा

जून, 2024 के चुनाव परिणामों के बाद राहुल गांधी का ग्राफ काफी बढ़ गया है। बेशकङ्क इसके लिए उन्होंने लंबा संघर्ष किया और भारत के आधुनिक इतिहास में शायद सबसे लंबी पदयात्रा की जिसके दौरान उन्हें देशवासियों का हाल जानने और समझने का अच्छा मौका मिला। इस सबका परिणाम यह है कि वे संसद में आक्रामक तेवर अपनाए हुए हैंङ्क और तथ्यों के साथ सरकार को घेरते रहते हैं।

किसी भी लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए पक्ष और विपक्षङ्क दोनों का मजबूत होना जरूरी होता है। इसी से सत्ता का संतुलन बना रहता हैङ्क और सत्ताधीशों की जनता के प्रति जवाबदेही संभव होती है। अन्यथा किसी भी लोकतंत्र को अधिनायकवाद में बदलने में तनिक भी देर नहीं लगती। ॥ आज राहुल गांधी विपक्ष के नेता भी हैं जो भारतीय संवैधानिक व्यवस्था के अंतर्गत अत्यंत महत्वपूर्ण पद है जिसकी बात को सरकार हल्के में नहीं ले सकती। इंग्लैंड़ङ्क जहां से हमने अपने मौजूदा लोकतंत्र का काफी हिस्सा अपनाया हैङ्क में तो विपक्ष के नेता को ह्यशैडो प्राइम मिनिस्टर' के रूप में देखा जाता है। उसकी अपनी समानांतर कैबिनेट भी होती हैङ्क जो सरकार की नीतियों पर कड़ी नजर रखती है। यह एक अच्छा मॉडल है जिसे अपने सहयोगी दलों के योग्य नेताओं को साथ लेकर राहुल गांधी को भी अपनाना चाहिए। आपसी सहयोग और समझदारी बढ़ाने के लिए यह एक अच्छी पहल हो सकती है।

राहुल को सुनिश्चित करना होगा कि उनके सहयोगी दल इंडिया गठबंधन' में अपने को उपेक्षित महसूस न करें। इंडिया गठबंधन में राहुल के बाद सबसे बड़ा कद अखिलेश का है। अखिलेश की शालीनता और उदारता का उनके विरोधी दलों के नेता भी सम्मान करते हैं। ऐसे में अखिलेश को पूरा महत्व देकर राहुल अपनी ही नींव मजबूत करेंगे। हालांकि सपा और कांग्रेस गठबंधन के पिछले कुछ अनुभव अच्छे नहीं रहे। इसलिए और भी सावधानी बरतनी होगी। क्योंकि अखिलेश में इतना बड़प्पन है कि वे अपनी कटु आलोचक बुआजी' बहन मायावती से भी संबंध सुधारने में सद्भावना से पहल कर रहे हैं।

यही नीति ममता बनर्जी, उद्धव ठाकरे, शरद पवार और लालू यादव आदि को भी अपनानी होगी। तभी ये सब दल भारतीय लोकतंत्र को मजबूत बना पाएंगे। यही बात भाजपा पर भी लागू होती है। सबका साथ-सबका विकास' का नारा देकर भाजपा क्षेत्रीय दलों के साथ एनडीए गठबंधन चला रही है पर भाजपा का पिछले दस वर्षों का इतिहास रहा है कि उसने प्रांतों की सरकार बनाने में जिन छोटे दलों का सहयोग लिया, कुछ समय बाद उन्हीं दलों को तोड़ने का काम भी किया। इससे उसकी नीयत पर इन दलों को संदेह बना रहता है।

पिछले दो लोक सभा चुनावों में भाजपा अपने बूते पर केंद्र में सरकार बना पाई। पर 2024 के चुनाव परिणामों ने उसे मिलीझजुली सरकार बनाने पर मजबूर कर दिया। पर अब फिर वही संकेत मिल रहे हैं कि भाजपा का नेतृत्व तेलुगू देशम जदयू और चिराग पासवान के दलों में सेंध लगाने की जुगत में है। अगर इस खबर में दम है तो यह भाजपा के हित में नहीं होगा। जिस तरह सर्वोच्च न्यायालय ने जांच एजेंसियों के तौरझतरीकों पर लगाम कसनी शुरू की है उससे तो यही लगता है कि डराझधमका कर सहयोग लेने के दिन लद गए। भाजपा को अगर केंद्र में सरकार चलानी है या आगामी चुनावों में भी वो राज्यों की सरकारें बनाना चाहती है तो उसे ईमानदारी से ह्यसबका साथ-सबका विकास' की नीति पर चलना होगा।

हमारे लोकतंत्र का दुर्भाग्य है कि जीते हुए सांसद और विधायकों की प्रायः बोली लगा कर उन्हें खरीद लिया जाता है। इससे मतदाता ठगा हुआ महसूस करता है और लोकतंत्र की जड़ें भी कमजोर होती हैं।

1967 से हरियाणा में हुए दलझबदल के बाद से आयाराम गयाराम' का नारा चर्चित हुआ था। अनेक राजनैतिक चिंतकों और समाज सुधारकों ने लगातार इस प्रवृत्ति पर रोक लगाने की मांग की है पर कोई भी दल इस पर रोक लगाने को तैयार नहीं है। जबकि होना यह चाहिए कि संविधान में परिवर्तन करके ऐसा कानून बनाया जाए कि जब कोई उम्मीदवार लोक सभा या विधानसभा का चुनाव जीतता है तो उसे उस लोक सभा या विधानसभा के पूरे कार्यकाल तक उसी दल में बने रहना होगा जिसके चुनाव चिह्न पर वो जीत के आया है। अगर वो दूसरे दल में जाता है तो उसे अपनी सदस्यता से इस्तीफा देना होगा तभी इस दुष्प्रवृत्ति पर रोक लगेगी। सभी दलों को अपने हित में इस विधेयक को पारित कराने के लिए एकजुट होना होगा।

घूँघट की बगावत

15 सितम्बर 2024

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित
हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

बुजुर्ग की मौत प्रकरण:अपनी मांगों को लेकर सामाजिक कार्यकर्ताओं ने दिया

वाराणसी (जीकेबी)। रामनगर थाना क्षेत्र में हुए हादसे में वृद्ध की मौत के बाद लोगों में आक्रोश भी व्याप्त है। गत दिनों शुक्रवार को एक टीम मामले की जांच करने पहुंची थी। शनिवार को राजनैतिक दलों के साथ सामाजिक कार्यकताओं ने धरना-प्रदर्शन किया।

गंगा किनारे बलुआ घाट पर बारादरी की छत गिरने से चंदौली के परोरवा गांव निवासी मेवालाल उर्फ बाबाजी (60) की मौत को लेकर रामनगर के लोगों में रोष व्याप्त है। शनिवार की शाम सामाजिक कार्यकर्ता श्रीनारायण द्विवेदी उर्फ डंडा गुरु अपने सहयोगियों के साथ बलुआ घाट पहुंचे। वह मेवालाल के परिजनों को न्याय दिलाने और निर्माण कार्य कराने वाले ठेकेदार ओम प्रकाश पांडेय की गिरफ्तारी की मांग को लेकर धरने पर बैठ गए।

श्रीनारायण द्विवेदी ने कहा कि बलुआ घाट पर बीते बृहस्पतिवार को हुए हादसे में बुजुर्ग की मौत को लेकर संबंधित विभाग के कर्मचारी व अधिकारी भी उतने ही दोषी हैं, जितना ठेकेदार है। जब काम हो रहा था तब भी घटिया निर्माण की शिकायत की गई थी। गुणवत्तापूर्ण काम किया गया होता तो शायद यह घटना नहीं होती। उन्होंने कहा कि जब तक आरोपी ठेकेदार

की गिरफ्तारी नहीं हो जाती, तब तक धरना चलता रहेगा। धरने में कृपाशंकर यादव, धनंजय साहनी, राकेश गुप्ता, जितेंद्र यादव, अशोक साहनी, दिनेश साहनी उपस्थित रहे।

चंदौली के पूर्व सपा सांसद रामकिशुन यादव ने मेवालाल के घर जाकर उनकी पत्नी लक्ष्मीना और बेटे दशमी और राजन को ढाढ़स बंधाया। आश्वासन दिया कि परिवार को सरकारी नियमानुसार सभी तरह की मदद दिलाई जाएगी। इसके लिए जिलाधिकारी से लेकर शासन स्तर तक पत्राचार किया जाएगा। इसके बाद वह बलुआ घाट पहुंचे। फिर धरने पर बैठे सामाजिक कार्यकर्ता श्रीनारायण द्विवेदी का समर्थन किया। पूर्व सांसद ने कहा कि कमीशनखोरी के कारण बारादरी की छत जानलेवा साबित हुई। इस दौरान कृपा शंकर यादव, धनंजय साहनी, जितेंद्र यादव सहित अन्य लोग मौजूद रहे। बलुआ घाट पर लगभग 10 करोड़ की लागत से सुंदरीकरण का काम किया जा रहा है। बलुआ घाट स्थित बारादरी की छत ढहने से बीते बृहस्पतिवार को बुजुर्ग मजदूर मेवालाल की मौत हो गई थी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आदेश पर उत्तर प्रदेश प्रोजेक्ट कार्पोरेशन लिमिटेड के अधिकारी मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का निरीक्षण। वहीं, जिलाधिकारी एस राजलिंगम के निर्देश पर एडीएम सिटी के नेतृत्व में चार सदस्यीय टीम जांच कर रही है।

बताते चलें कि शुक्रवार को जांच टीम मौके पर पहुंचकर फोटोग्राफी व टूटे पत्थर का सैंपल एकत्रित की थी। आगे की जांच के लिए बारादरी की छत के मलबे को लाल रस्सी से घेर दिया गया था। हालांकि गंगा के जलस्तर में वृद्धि के कारण बारादरी का चबूतरा डूब गया है। इस वजह से जांच के लिए अब आगे कुछ भी साक्ष्य मिल पाना मुश्किल है।

सरकारी कार्यो में भ्रष्टाचार और गुणवत्ताविहीन कार्यो का नतीजा

पिछले एक दशक में पुलों के गिरने से लेकर प्रतिमाओं के ढहने, मॉबलिंचिग के द्वारा लोगों को मौत के घाट उतारा गया। मणिपुर में ऐसी हिंसा हुई जो अभी भी रह-रह करके होती रहती है। लेकिन उस समय प्रधानमंत्री ने इस प्रकार से कोई माफी नहीं मांगी तो लोगों को इस माफी से आश्चर्य होता है। लेकिन फिर यही सवाल उठता है कि क्या यह माफी राजनीतिक कारणों से है? लेकिन लोगों को महाराष्ट्र के भावी चुनाव में इस घटना से होने वाली राजनीतिक क्षति का डैमेज कंट्रोल ही लगती है।

महाराष्ट्र में शिवाजी के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। लोग उनसे भावुकता के हद तक जुड़े हुए हैं। शिवसेना की पूरी राजनीति ही नहीं अन्य पार्टियां भी शिवाजी और सावरकर के मुद्दे पर एक जगह खड़ी हो जाती हैं। यही कारण है कि प्रतिमा के गिरने पर सबसे पहले राज्य सरकार में उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने माफी मांगी और सरकार ने इसकी जांच कराकर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई करने की घोषणा भी की। ऐसा नहीं है कि प्रतिमा को किसी ने गिरां दिया बल्कि यह तो अपने आप गिर गई जिस प्रकार महाकाल में प्रतिमाएं स्वतः हवा के प्रभाव से गिर गई थीं। दिल्ली में बारिश होने पर हवाई अड्डे का एक हिस्सा गिर गया था। नया टर्मिनल जगह-जगह से चू रहा था। बिहार में दर्जन भर से अधिक पुल गिर गए। गुजरात का मोरवी पुल और पुल भी गिर गए।

पिछले कुछ वर्षों में इस प्रकार की घटनाएं आम हो चुकी हैं जो इस बात की गवाही देती हैं कि भ्रष्टाचार का घुन किस तरह से पूरी व्यवस्था को चट कर गया है कि चीजें अल्पकाल में ही धराशायी हो जा रही हैं।

महाराष्ट्र में शिवाजी की प्रतिमा गिरने के बाद महाराष्ट्र सरकार के राकांपा के उपमुख्यमंत्री अजित पवार से माफी मांगने का जो सिलसिला शुरू हुआ था वह भाजपा के उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणनीस से होते हुए प्रधानमंत्री तक पहुंच गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जब महाराष्ट्र के दौरे पर गए तो उन्होंने भी शिवाजी की प्रतिमा के गिरने पर नतमस्तक होते हुए माफी मांगी है। जो उनके पूर्व के राजनीतिक इतिहास से परे रही है। यह प्रतिमा सिंधुदुर्ग जिले में स्थापित थी। सिंधुदुर्ग जिले में 4 दिसंबर, 2023 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नौसेना दिवस पर छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा का अनावरण किया था। जो 35 फुट की थी।

अभी तक गुजरात से लेकर मणिपुर तक बहुत कुछ हुआ किंतु प्रधानमंत्री ने माफी नहीं मांगी जबकि गुजरात में 2002 के दंगों के लिए उन्हें राजधर्म का पालन करने की नसीहत तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने दी थी और विभिन्न साक्षात्कारों में इस सम्बन्ध में प्रश्न पूछे जाने पर कन्नी काटने वाले, नरेन्द्र मोदी ने शिवाजी की प्रतिमा के गिरने पर माफी मांगी है जिसका उद्घाटन उन्होंने स्वयं किया था। यही नहीं महाकाल की प्रतिमाएं भी एक आंधी में ढह गई थीं और उस दृश्य को देखकर तमाम सवाल उठे थे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ही उसका भी उद्घाटन किया था।

यह महज किसी प्रतिमा का गिरना नहीं है यह पूरी व्यवस्था की पोल खोलता है कि नारों में भले ही कुछ भी कहा जा रहा है लेकिन वास्तव में यह सब सरकारी कार्यो में भ्रष्टाचार और गुणवत्ताविहीन कार्यों का नतीजा है। यदि कहीं प्रतिमा को किसी ने गिराया होता तो, महाराष्ट्र की स्थिति कानून व्यवस्था की दृष्टि से बहुत खराब हो गई होती। इस प्रकार की घटनाओं से यह भी प्रतीत होता है कि रख रखाव की स्थितियां बहुत बदतर हैं और निर्माण कार्य की गुणवत्ता वह चाहे प्रतिमा की हो या पुल या हवाई अड्डों की दयनीय दिशा में है और गुणवत्ता से समझौता किया जा रहा है।

कहते हैं कि राजनीति क्या से क्या न कराये प्रधानमंत्री की यह माफी भी उसी राजनीति का हिस्सा है। पिछले पांच वर्षों में चुनावी राजनीति के लिए क्या क्या नहीं हुआ महाराष्ट्र में। भाजपा और शिवसेना का गठबंधन हीं नहीं टूटा, रातोंरात दल बदल करके राष्ट्रपति शासन उठाकर शपथ दिलाने सरकार के गिरने से लेकर शिवसेना, राकांपा में दो फाड़ कराने से लेकर मुख्यमंत्री को पदावनत करके उप मुख्यमंत्री बना देने तक के कार्य इसी राजनीतिक के चलते हुए। टूटे हुए दल किस तरह से असली बन गए और किस तरह चुनाव आयोग की दृष्टि में पुराने दल नकली साबित हो गए। सुप्रीम कोर्ट तक मामला गया लेकिन मामला 'ढाक के तीन पात' ही रहा।

अभी भी महाराष्ट्र के चुनाव में महाअघाड़ी जो उद्धव ठाकरे की शिवसेना, शरद पवार की राकांपा और कांग्रेस एक साथ चुनाव मैदान में उतरने जा रही है जिससे भाजपा और उसके सहयोगी दल अपने को कमजोर पा रहे हैं उसमें भी यह शिवाजी की प्रतिमा के गिरने की घटना ने राजनीति को भावनात्मक तरीके से प्रभावित करने का काम किया है। ऐसे प्रधानमंत्री की माफी चुनावी राजनीति का एक डैमेज कंट्रोल ही कहा जायेगा जिस चुनौती से महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ ड्ड और विपक्ष को निपटना है।

अब यमुना ने पार किया खतरे का निशान, बीस गांवों का टूट संपर्क कटा

बांदा (जीकेबी)। बांदा जिले में रौद्र रूप दिखाने के बाद केन नदी का पानी घटने लगा, लेकिन यमुना का पानी बढ़ गया है। यमुना खतरे के निशान से करीब एक मीटर ऊपर बह रही है। यमुना की बाढ़ से पदारथपुर, खजुरी व केन से शंकर पुरवा सहित कई गांव और मजरे घिरे गए हैं। करीब 20 गांवों का संपर्क कट गया है। अधिकारियों ने मौके पर निरीक्षण कर स्थिति देखी और ग्रामीण को सचेत रहने के लिए कहा है। केंद्रीय जल आयोग के मुताबिक शनिवार को शाम पांच बजे केन नदी का जलस्तर 100.07 मीटर रहा, खतरे के निशान (104 मीटर) से करीब तीन मीटर कम है। इससे केन किनारे बसे सदर क्षेत्र के अछरौड़, ब्रह्मा डेरा, चटगन सहित कई गांवों के ग्रामीणों ने राहत की सांस ली। ब्रह्मा डेरा के किसान अवध किशोर का कहना है कि बाढ़ तो सिमट रही है, पर बीमारियां छोड़ रही है। स्वास्थ्य विभाग और प्रशासन सिर्फ कागजी मदद के दावे करता है। चिल्ला में यमुना नदी और केन नदी का संगम है। यहां केन नदी स्थिर है। दूसरी ओर चिल्ला में यमुना नदी का जलस्तर खतरे के निशान 100 मीटर से करीब एक मीटर ऊपर है। हालांकि पानी स्थिर है। रात में उतरने की संभावना है। यमुना नदी किनारे बसे गांवों में जिलाधिकारी नगेंद्र प्रताप व एसपी अंकुर अग्रवाल ने जायजा लिया। बाढ़ क्षेत्र में लेखपालों, एसडीएम व तहसीलदार को ग्रामीणों पर नजर बनाए रखने की हिदायत दी। एसडीएम पैलानी शशि भूषण मिश्रा, नायब तहसीलदार जसपुरा वेद प्रकाश के साथ क्षेत्रीय बाढ़ ग्रस्त इलाकों का दौरा कर रहे हैं। शनिवार को ग्रामीणों से बातचीत की और हाल-चाल जाना। वहीं पैलानी में केन नदी का जलस्तर लगभग एक मीटर घट गया है। चिल्ला थाना क्षेत्र के खजूरी तथा पदारथपुर गांव में किसानों की तिल तथा ज्वार की फसलें जलमग्न हो गई हैं। किसानों का भारी नुकसान उठाना होगा। पैलानी क्षेत्र के नरी-पलरा

संपर्क मार्ग, मरझा-पडेरी संपर्क मार्ग, पडोहरा-नांदादेव

संपर्क मार्ग, सिंधनकला-तुरी संपर्क मार्ग शनिवार को भी बंद रहे। यहां रपटों के करीब दो मीटर ऊपर तेज बहाव है। शंकर पुरवा व खजूरी गांव पानी से घिरे हैं। यहां ग्रामीणों के आने-जाने के लिए नाव ही एक सहारा है। प्रशासन की ओर से यहां स्टीमर व नाविक आदि की व्यवस्था नजर नहीं आ रही हैं। इन बाढ़ग्रस्त गांवों में चार दिन से बिजली नहीं आ रही है। इससे लोगों के मोबाइल तक बंद हैं।

गुणवत्ता से नहीं अपने कमीशन की फिक्र

बलुआ घाट पर चल रहे निर्माण कार्य की जांच की जा रही है। प्रशासन और यूपीपीसीएल की ओर से कार्रवाई की जा रही है। कार्यदायी एजेंसियों के कार्यों की मॉनीटरिंग की जा रही है। इसके अलावा जो भी गड़बड़ी होगी उसे दूर कराया जाएगा।

आरके रावत,

वाराणसी (जीकेबी)। शहर में चल रहे पर्यटन विभाग के निर्माण कार्यों में मानकों की खुलेआम अनदेखी की जा रही है। सूत्रों के मुताबिक विभाग में 35 प्रतिशत तक कमीशन तय होता है। ऐसे में काम की गुणवत्ता खराब होना लाजमी है। इसका नमूना बलुआ घाट पर देखने को मिला।

एजेंसियों को काम देने वालों को निर्माण कार्य की गुणवत्ता से नहीं बल्कि अपने कमीशन की फिक्र रहती है। यही कारण है जितनी तत्परता हिस्सा बंटोरने में दिखाते हैं उतनी की तत्परता निर्माण कार्यों की नियमित जांच में दिखते तो इस प्रकार से किरकिरी न होती। घटना के बार लकीर पीटने के लिए जांच और कुछ दिनों के लिए संबंधित लोगों को इधर से उधर कर दिया जाएगा। कुछ दिन बाद जब मामला ठंडा हो जाएगा तो फिर से यह खेल शुरू हो जाएगा। पर्यटन विकास के लिए 90 करोड़ रुपये सारनाथ में प्रो पुअर योजना को अंजाम दिया जा रहा है। आए दिन कोई न कोई समस्या यहां आती रहती है। कभी बिजली का पोल गिर जाता है तो कभी सड़क धंस जाती है। कभी सीवर ओवरफ्लो करने लगता है। इसी प्रकार सामनेघाट घाट का निर्माण कार्य 7 करोड़ रुपये से कराया जा रहा है। यहां पर भी कभी घाट के पत्थर टूट जाते हैं तो कभी सीमेंट बह जाती है। मांडव तालाब का सुंदरीकरण कार्य 3 करोड़ से कराया जा रहा है। यहां भी केवल मिट्टी निकालकर छोड़ दिया गया है। आसपास का सीवर इसी में जा रहा है। पिशाच मोचन कुंड का कार्य 3 करोड़ से कराया गया। अब वहां की हालत किसी से छिपी नहीं है। यहां की स्थिति बद से बदतर हो गई है। संत गुरु रविदास जन्मस्थली सीरगोवर्धन में कार्य कराया जा रहा है। यहां की आए दिन कोई न कोई समस्या आ रही है।

स्वयं को भगवान समझने वालों को यही संदेश

जनता सर्वोपरि है। कोई भी नेता चाहे कितना भी महान क्यों न हो, देवता या भगवान होने का दावा नहीं कर सकता। जनतंत्र में इस तरह की सोच के लिए कोई स्थान नहीं है।

संघ अपनी भूमिका वही मानता है जो श्रीकृष्ण ने महाभारत में निभायी थी। संघ के दूसरे सरसंघचालक माधव सदाशिवराव गोलवलकर से जब यह पूछा गया कि क्या संघ सत्ता चाहता है तो उन्होंने कहा था, ह्यहमारा आदर्श श्रीकृष्ण हैं, जिनकी मुट्ठी में एक पूरा साम्राज्य था, पर जिन्होंने सत्ता हाथ में लेने से इनकार कर दिया था।ह्ण आरएसएस आज भी वही भूमिका निभाना चाहता है, लेकिन यह नहीं भुलाया जाना चाहिए कि गुरु गोलवलकर ने यह बात लगभग 75 साल पहले कही थी। तब से लेकर अब तक बहुत कुछ बदल चुका है। फिर भी, भाजपा वर्तमान सरसंघचालक की बातों की अवहेलना नहीं कर सकती। भाजपा के नेतृत्व को यह समझना होगा कि विपक्ष दुश्मन नहीं होता, कि जनतांत्रिक व्यवस्था में अहंकार के लिए कोई स्थान नहीं है, कि कोई अपने आप को सर्वोपरि मानकर देश का नेतृत्व नहीं कर सकता। आज भी विश्व-व्यवस्था में भारत जैसे बड़े देश का अपना महत्व है। आजादी मिलने के बाद से ही विश्व भारत की ओर आशाभरी निगाहों से देखता आ रहा है। हमारी गुट-निरपेक्षता की नीति कई बार अपना महत्व रेखांकित कर चुकी है। आज भी प्रधानमंत्री से अपेक्षा की जा रही है कि वे दुनिया पर गहराते युद्ध के बादलों को दूर करने में सक्रिय भूमिका निभाएं। रूस और यूक्रेन में चल रहा युद्ध हो अथवा इस्राइल-फलस्तीन की लड़ाई, भारत की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। प्रधानमंत्री इस दिशा में सक्रिय दिखाई भी दे रहे हैं, पर यह कार्य मणिपुर जैसे राज्य की अवहेलना करके नहीं होना चाहिए। इस मुद्दे पर प्रधानमंत्री की चुप्पी कुछ हैरान करती है। कुछ विशेष करने के लिए भेजे जाने वाले व्यक्ति को हर मोर्चे पर अपनी महत्ता प्रमाणित करनी होगी!

बहरहाल, स्वयं को अविनाशी मानना अथवा गैर-जैविक समझना एक तरह से दंभ को ही प्रकट करता है। संघ-प्रमुख ने, पता नहीं क्या सोचकर किसी के भगवान न होने वाली बात कही है, पर इस बात को हलके में नहीं लिया जाना चाहिए। संभव है यह बात संघ और भाजपा के रिश्तों में आये तनाव का परिणाम हो, पर यह बात हर भारतीय को समझनी होगी कि देवत्व के किसी दावे के लिए इक्कीसवीं सदी की दुनिया में कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

कुछ अरसा पहले वाराणसी में एक टी.वी. इंटरव्यू में प्रधानमंत्री मोदी ने कुछ ऐसा कह दिया था, जिससे कोई भी चौंक सकता था। प्रधानमंत्री ने कहा था, ह्यपहले मैं यह माना करता था कि मेरा जन्म बायलॉजिकल था। कालांतर में मुझे विश्वास हो गया कि मुझे भगवान ने किसी विशेष काम के लिए भेजा है।ह्ण उनके इस कथन ने बहुतों को चौंकाया था। ऐसा नहीं है कि अलौकिक शक्तियों से युक्त होने के दावे पहले नहीं किये गये, पर अक्सर ऐसी बातों को भुला दिया जाता है। प्रधानमंत्री की ह्यगैर बायलॉजिकलह्ण होने वाली बात को भी भुला ही दिया गया था। अच्छी बात यह भी है कि स्वयं प्रधानमंत्री ने भी अपनी इस बात को दुहराना जरूरी नहीं समझा। लेकिन हाल ही में केरल में हुई संघ-परिवार की तीन दिवसीय बैठक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुखिया मोहन भागवत ने बिना प्रधानमंत्री का नाम लिए कुछ ऐसा कहना जरूरी समझा कि अनायास ही प्रधानमंत्री की कही बात याद आ गयी। भागवत ने केरल में कहा, ह्यकिसी को स्वयं को भगवान नहीं समझना चाहिए, भगवान लोग बनाते हैं।ह्ण ज्ञातव्य है कि संघ-प्रमुख बिना किसी का नाम लिए यह भी कह चुके हैं कि एक स्वयंसेवक को अहंकारी नहीं होना चाहिए। संघ-प्रमुख ने भले ही अपने भाषण में किसी का नाम न लिया हो, पर समझने वालों के लिए संकेत समझना मुश्किल नहीं था। और अब इस बारे में कयास लगाये जा रहे हैं कि उन्होंने यह बात कहना जरूरी क्यों समझा।

केरल की बैठक में संघ-परिवार के सभी घटक सम्मिलित हुए थे। संघ की राजनीतिक शाखा भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी वहां उपस्थित थे। हाल ही में हुए आम चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा-अध्यक्ष ने स्पष्ट शब्दों में यह कहा था कि ह्यअब भाजपा को संघ की बैसाखी की आवश्यकता नहीं है।ह्ण संघ के नेतृत्व को यह बात रास नहीं आयी, और कहते हैं, भाजपा को चुनाव में पर्याप्त सफलता न मिलने का एक कारण संघ के स्वयंसेवकों की बेरुखी भी थी। संघ प्रमुख द्वारा बार-बार बिना नाम लिए प्रधानमंत्री मोदी को निशाना बनाना भी यह बताता है कि संघ और भाजपा के रिश्तों में कहीं कुछ खटास आयी है। यह खटास कैसे दूर हो सकती है, इस बारे में संबंधित पक्षों को ही सोचना और कुछ करना होगा। लेकिन भाजपा के नेतृत्व को, विशेष रूप से प्रधानमंत्री को, कुछ निर्णायक कदम उठाने ही होंगे। बहरहाल, आजादी मिलने से कुछ ही पहले की बात है। जवाहरलाल नेहरू ने ह्यचाणक्यह्ण छद्मनाम से एक लेख लिखकर देश की जनता को सावधान किया था कि यदि जवाहरलाल नेहरू को नियंत्रित नहीं रखा गया तो यह व्यक्ति तानाशाह भी बन सकता है। उनके शब्द भले ही कुछ और रहे हों, पर मंतव्य यही था। उन्होंने देश की जनता को आगाह किया था कि जनतांत्रिक व्यवस्था में किसी को भी स्वयं को अपनी कथित अलौकिकता का दावा करने का अधिकार नहीं है। महान वही है जिसे जनता उसके कार्यों के आधार पर महान समझे। जवाहरलाल नेहरू ने जब छद्मनाम से वह लेख लिखा था तो वे वस्तुतः स्वयं को आगाह कर रहे थे कि उन्हें संयम से, सीमा में, रहना होगा। आज मोहन भागवत स्वयं को भगवान समझने वालों को यही संदेश दे रहे हैं। वस्तुतः यह संदेश नहीं, चेतावनी है। उनके लिए भी चेतावनी जो स्वयं को महान अथवा अलौकिक समझते हैं, और जनता के लिए भी जो किसी कथित अलौकिकता का शिकार बन सकती है, बन जाती है। नेताओं को संयम में रहना चाहिए, और जनता को भी उनकी नकेल अपने हाथ से नहीं छोड़नी चाहिए। अब्राहम लिंकन ने कहा था, जनतंत्र शासन की उस प्रणाली का नाम है जिसमें सरकार जनता की होती है, जनता के लिए होती है, और जनता के द्वारा चलायी जाती है।

येचुरी का जाना अपूरणीय क्षति

व्याहारिकता और हठवादिता के बीच कई बार वास्तविक, तो कई बार काल्पनिक विभाजन मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) की राजनीति का विशिष्ट लक्षण रहा है, जिसकी महत्वपूर्ण धुरी रहे मिलनसार, मृदुभाषी और लोकप्रिय कम्युनिस्ट नेता सीताराम येचुरी का निधन भारतीय राजनीति में एक युग के अंत का प्रतीक है। पिछले ही महीने पश्चिम बंगाल के पूर्व मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य के निधन के बाद अब सीताराम येचुरी के जाने से स्पष्ट है कि अपने गहनतम संकट के समय में देश का मार्क्सवादी आंदोलन अपने दो सबसे महत्वपूर्ण लोगों को खो चुका है। दशकों तक भारतीय राजनीति के मंच पर सक्रिय रहे येचुरी ने देश में वामपंथी राजनीति का चढ़ाव और उतार, दोनों देखे। हालांकि, राष्ट्रीय राजनीति के विभिन्न दौरों में उनकी राजनीतिक सूझ-बूझ, बौद्धिक क्षमता और संघर्षशीलता ने उन्हें वामपंथी आंदोलन के एक मजबूत स्तंभ के रूप में तो स्थापित किया ही, देश की राजनीतिक संस्कृति को भी गहराई से प्रभावित किया। तेज-तर्रार येचुरी 1974 में स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई), तो 1975 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) से जुड़े। 1984 में सीपीआई-एम की केंद्रीय समिति के लिए चयनित हुए, तो 1992 में 14वीं कांग्रेस में पोलित ब्यूरो के लिए चुने गए। 2005 में पहली बार राज्यसभा सदस्य के रूप में चुने जाने वाले येचुरी अपने विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण और तार्किकता के लिए जाने जाते थे। वह वर्तमान राजनीति के उन विरले राजनेताओं में रहे, जिनके भाषण भारतीय राजनीति के बौद्धिक स्तर को ऊंचा उठाने वाले होते थे, जहां वह विरोधी दलों के साथ भी सम्मानजनक और सार्थक संवाद करते थे। 2015, 2018 के बाद 2022 में येचुरी लगातार तीसरी बार सीपीआई-एम के महासचिव बने थे। एक रणनीतिकार के रूप में उनका कौशल तब सामने आया था, जब उन्होंने 1996 में जनता दल के एचडी देवेगौड़ा को प्रधानमंत्री बनाने के लिए पर्दे के पीछे काम किया। हालांकि इसी वक्त में ज्योति बसु को संयुक्त मोर्चे का प्रधानमंत्री बनाने को लेकर उनके विरोध को खुद ज्योति बसु ने ऐतिहासिक भूल बताया था। माकपा के महासचिव के रूप में भी उनका कार्यकाल चुनौतीपूर्ण रहा। लेकिन भारतीय राजनीति में वामपंथ की बदलती भूमिका, वैश्वीकरण के दौर में सामाजिक असमानताओं में वृद्धि और राजनीतिक ध्रुवीकरण के समय में भी येचुरी वामपंथी- आंदोलन को प्रासंगिक बनाए रखने की लड़ाई लड़ते रहे। जाहिर है, सीताराम येचुरी का जाना न केवल वामपंथी राजनीति, बल्कि भारतीय लोकतंत्र के लिए अपूरणीय क्षति है। वर्तमान राजनीति के कोलाहल में उनके जैसे शांत, विचारशील, अनुशासित और सभी दलों से सम्मान पाने वाले नेता की कमी निश्चित ही खलेगी।

घूँघट की बगावत

15 सितम्बर 2024

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित
हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

भयंकर दर्द में गाया गया स्त्रोत सामवेद का स्त्रोत

भगवान शिव के भक्त उन्हें प्रसन्न करने के लिए कई तरह से पूजा करते हैं। सोमवार का दिन भोलेनाथ को समर्पित होता है। वहीं भगवान शिव के भक्त उनकी उपासना और पूजा के लिए युगों-युगों से कई स्त्रोत की रचना की है। भोलेनाथ को समर्पित कई ग्रंथों में कई तरह के स्तोत्र की रचनाओं का उल्लेख मिलता है। लेकिन भगवान शिव को सभी रचनाओं में शिव तांडव स्त्रोत सबसे अधिक प्रसन्न होते हैं। इस स्त्रोत की रचना भगवान शिव के प्रिय भक्त रावण द्वारा रचित है। मान्यता के अनुसार, जो भी भक्त सच्चे मन से शिव तांडव स्त्रोत का पाठ करता है, भोलेनाथ उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि दशानन ने शिव तांडव स्त्रोत की रचना कब और कैसे की थी। बता दें कि ऋषि विश्रवा की दो पत्नियां थीं और उनकी दो संतानें थी। जिनमें से एक का नाम कुबेर और दूसरे पुत्र का नाम दशानन था। लेकिन ऋषि विश्रवा ने कुबेर को लंका का सारा राजपाट ले दिया। लेकिन कुबेर लंका का राजपाट छोड़कर हिमाचल में तपस्या करने चले गए। जिसके बाद कुबेर का राजपाट दशानन को मिल गया। लंका का राजपाट मिलने के बाद रावण अहंकारी हो गया। वह अहंकार में आने के कारण ऋषियों और साधुओं पर अत्याचार करने लगा। जब रावण के अत्याचारों का पता कुबेर को चला, तो उन्होंने दशानन को समझाने का प्रयास किया। ऐसे में नाराज होकर दशानन ने कुबेर की नगरी अलकापुरी पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में कुबेर को हराकर दशानन ने पुष्पक विमान छीन लिया और लंका ले जाने लगे। तभी रास्ते में कैलाश पर्वत आ गया और पुष्पक विमान रुक गया और आगे नहीं बढ़ पाता। जिसके बाद रावण कैलाश पर्वत को रास्ते से हटाने की कोशिश करने लगा। जिससे पर्वत हिलने लगता है और सभी शिवगण दशानन के पास आते हैं और रावण को ऐसा करने से रोकते हैं। लेकिन हठी रावण नंदी का अपमान कर कैलाश पर्वत को फिर से हटाने लगते हैं। वहीं भगवान शिव भी रावण की सारे हरकतों को देख रहे थे। ऐसे में रावण के घमंड को तोड़ने के लिए भोलेनाथ अपने पैर के अंगूठे का हल्का सा स्पर्श पर्वत पर करते हैं। जिससे पर्वत का भार इतना अधिक हो जाता है कि रावण उसने नीचे दबने लगा और बुरी तरह से घायल हो गया। ज्यादा दर्द के कारण वह इतनी तेज-तेज से चिल्लाने लगा। उसकी चीत्कार इतनी भीषण थी कि ऐसा लग रहा था कि प्रलय आ जाएगी। ऐसे में रावण ने भोलेनाथ को प्रसन्न करने के लिए शिव की स्तुति करने लगा। तब दशानन ने सामवेद में उल्लेखित भगवान शिव के सभी स्तोत्रों का गान करने लगा। रावण की स्तुति से प्रसन्न होकर भगवान शिव कैलाश पर्वत से अपने पैर का अंगूठा हटा देते हैं और रावण को दर्द मुक्त कर देते हैं।

जएसटी को लेकर पेचीदा मामला

जब सरकार ने विश्वविद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों में शोध एवं अनुसंधान के लिए मिलने वाली राशि और ग्रांट पर जीएसटी लगा रखी थी फिर हम संदेश क्या देना चाहरहे हैं? इस जीएसटी की वजह से कितनों के व्यापार ठप्प पड़ गए हैं। खर्चे बढ़ गए हैं। और यही नहीं रोजमर्रा के जीवन में भारी वृद्धि। हो गई है जो महंगाई को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई है। सरकार ने जीएसटी के माध्यम से लोगों को भुलावे में रखने का प्रयत्न किया है। क्योंकि जब पहले बजट में प्रावधानित किये जाते थे जो कुद दिनों तक हल्ला गुल्ला मचता था जनता में गुस्सा होता था कि सरकार ने इतना टैक्स कै से बढा दिया है। अब जीएसटी के माध्यम से ही बिना किसी बजट के ही जबरदस्त टैक्स वसूली हो रही है और जीएसटी कौंसिल नामक एक तरीका निकाल लिया गया है जिसमें सरकार के ही वित्त मंत्री और राज्यों के वित्त मंत्री शामिल होते हैं। यानी सब कुछ वहीं है सिर्फ उसका स्वरूप इस तरह से बदल दिया गया हे कि जोर का झटका धीरे से लगे और जिसे लगे वह समझ भी न पाये।

देश भर में दोहरी कर प्रणाली चल रही है। आबकारी, डीजल-पेट्रोल और आबकारी से वैट वसूल कर अपनी सरकार चला रहे हैं। जीएसटी काउंसिल की 54वीं बैठक इस बात की गवाह है कि इसमें कोई स्थिरता नजर नहीं आ रही है कि क्या होना

चाहिए क्या नहीं। आए दिन इसके स्लैब घटते-बढ़ते रहते हैं। तय तो सरकार ही कर रही है लेकिन नाम जीएसटी काउंसिल का देकर वास्तव में जनता को भुलावे में रख रही है मानो जीएसटी काउंसिल कोई आसमान से उतरी इबारत हो।

गुड्स एण्ड सर्विसेज टैक्स यानी जीएवसटी काउंसिल की 54वीं बैठक में सबसे बड़ा मुद्दा हेल्थ और लाइफ इंश्योरेन्स प्रीमियत पर जीएसटी से छूट का बताया जा रहा था, उस पर कोई निर्णय ही नहीं लिया गया। इसे अगली बैठक के लिए टाल दिया गया। बैठक में कहा गया कि इस पर ग्रुप ऑफ मिनिस्टर्स विचार करेगा। लाइफ और हेल्थ इंश्योरेंस के प्रीमियत पर 18 प्रतिशत जीएसटी लिया जा रहा है। केन्द्र सरकार में सड़क, परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने भी वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन को पत्र लिखकर लाइफ इंश्योरेन्स प्रीमियम से जीएसटी हटाने की मांग की थी।

जीएसटी को लेकर एक पेचीदा मामला ऑनलाइन गेमिंग का है जिसमें कई मामले हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में लंबित हैं। यह गेम कराने वालों का तर्क है कि यह तो विधिक है क्योंकि हम तो सरकार को जीएसटी देते हैं। वही यह तर्क भी हे कि यह तो गेम आफस्किल है। जुआ नहीं। यह सिल्वर लाइन तो हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में लम्बित याचिकाओं के निर्णय के आधार पर होगा कि वास्तव में ऑनलाइन गेमिंग के बहुत से साइट जुआ खिला रहे हैं और जीएसटी दे रहे हैं वही इसे गेम ऑफ स्किल बता रहे हैं। सरकार इनसे अच्छी खासी जीएसटी उगाह रही है। यानी सैंया भये कोतवाल तो डर काहे का।

जीएसटी लोगों का खून चूसने वाली कर प्रणाली बन गई है। यही कारण है कि इसे टैक्स टेरर की संज्ञा दी जाने लगी है। इसका हाल यह है जो लोग आयकर देते हैं वे तो बड़े शान से कहते हैं हम तो जीएसटी की टैक्स पेयर हैं। लेकिन जीएसटी देने वाले सामान्य वर्ग के लोग अधिक हैं जिन्हें हम अल्प-आय-वर्ग श्रेणी का कह सकते हैं। जीएसटी की 54 वीं बैठक में बड़े शान से यह कहा जा रहा है कि कैं सर की दवाओं पर लगने वाली जीएसटी घटा दी गई है क्या इस प्रकार के दवाओं पर जीएसटी होनी भी चाहिए।

भाषण में हिमानी, सुलेख लेखन में अर्चना अव्वल

चंबा। राजकीय उच्च पाठशाला करोड़ी में हिंदी दिवस पर भाषण प्रतियोगिता में दसवीं की सुहाना ने पहला, आठवीं की हिमानी ने दूसरा और दसवीं की अर्चना ने तीसरा स्थान हासिल किया। सुलेख लेखन में अर्चना, सुहाना ओर स्नेहा ने प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाया। प्रश्नोत्तरी में अर्चना पहले, दक्ष दूसरे और नताशा तृतीय स्थान पर रहीं। के भाषा अध्यापक देश राज ने हिंदी भाषा की विकास यात्रा और हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। मुख्याध्यापक राजीव राठौड़ ने विजेताओं को पुरस्कृत किया।

इसी तारतम्यता में कुठेड़ पंचायत के बनी नाग मंदिर में क्रिकेट प्रतियोगिता का खिताबी मुकाबला खेला गया। कलंदरा स्ट्राइकर्स ने जुम्हार की टीम को हराकर ट्रॉफी पर कब्जा किया। प्रतियोगिता में करीब 40 टीमों ने भाग लिया। फाइनल कलंदरा स्ट्राइकर्स और जुम्हार के बीच खेला गया। जुम्हार की टीम ने पहले बल्लेबाजी कर 12 ओवर में 114 रना बनाए। अभिषेक ने सर्वाधिक 38 और चीकू ने 23 रन की पारी खेली। लक्ष्य का पीछा करने उतरी कलंदरा स्ट्राइकर्स ने 11.2 ओवर में ही लक्ष्य हासिल कर लिया। इसमें कप्तान सुनील ने 40 और प्रशांत ने 38 रन बनाए। मैन ऑफ द सीरीज स्ट्राइकर्स के कप्तान सुनील बने। प्रतियोगिता के समापन पर समाजसेवी इसरो ठाकुर ने खिलाड़ियों को सम्मानित किया।

स्वास्थ्य के लिए बड़ा खतरा वायु प्रदूषण

वायु प्रदूषण का संकट भारत की राष्ट्रव्यापी समस्या है। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो की हाल ही में जारी रिपोर्ट इस चिन्ता को बढ़ाती है जिसमें कहा गया कि वायु प्रदूषण के चलते भारत में जीवन प्रत्याशा में गिरावट आ रही है। जिसमें फेफड़ों को नुकसान पहुंचाने वाले पी.एम. 2.5 कण की बड़ी भूमिका है। रिपोर्ट बताती है कि वैश्विक मानकों से कहीं अधिक प्रदूषण भारत में लोगों की औसत आयु तीन से पांच वर्ष एवं दिल्ली में दस से बाहर वर्ष कम कर रहा है। बहरहाल प्रदूषण के खिलाफ योजनाबद्ध ढंग से मुहिम छेड़ने की जरूरत है। अध्ययन कहता है कि देश की एक अरब से अधिक आबादी ऐसी जगहों पर रहती है जहां प्रदूषण डब्ल्यूएचओ के मानकों से कहीं अधिक है। दरअसल, देश के बड़े शहर आबादी के बोझ से त्रस्त हैं। बढ़ती आबादी के लिये रोजगार बढ़ाने व अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए जो औद्योगिक इकाइयां लगायी गई, उनकी भी प्रदूषण बढ़ाने में भूमिका रही है। डीजल-पेट्रोल के निजी वाहनों को बढ़ता काफिला, निर्माण कार्यों में लापरवाही, कचरे का निस्तारण न होना और जीवाश्म ईंधन ने प्रदूषण बढ़ाया है। यह बढता वायु प्रदूषण हमारी जीवन शैली से उपजे प्रदूषण की देन भी है। यह निराशाजनक खबरों के बीच उत्साहवर्धक खबर यह भी है कि भारत में सूक्ष्म कणों से पैदा होने वाले जानलेवा प्रदूषण में गिरावट आई है। लेकिन अभी जीवन प्रत्याशा घटाने वाले प्रदूषण को लेकर जारी लड़ाई खत्म नहीं हुई है। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो के एनर्जी पॉलिसी इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट ह्यवायु गुणवत्ता जीवन सूचकांक-2024ह्ल बताती है कि भारत में साल 2021 की तुलना में 2022 के वायु प्रदूषण में 19.3 फीसदी की कमी आई है। हालांकि, यह उपलब्धि मौजूदा हालात में बहुत बड़ी तो नहीं कही जा सकती है, लेकिन यह बात उत्साहवर्धक है कि प्रत्येक भारतीय की जीवन प्रत्याशा में इक्यावन दिन की वृद्धि हुई है। हालांकि, हम अभी विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों की कसौटी पर खरे नहीं उतरे हैं, लेकिन एक विश्वास जगा है कि युद्ध स्तर पर प्रयासों से भयावह प्रदूषण के खिलाफ किसी हद तक जंग जीती भी जा सकती है। लेकिन इसके साथ ही सूचकांक-2024 में यह चेताया भी है कि यदि भारत में डब्ल्यूएचओ के वार्षिक पीएम 2.5 के सांद्रता मानक के लक्ष्य पूरे नहीं होते तो भारतीयों की जीवन प्रत्याशा में करीब साढ़े तीन साल की कमी आने की आशंका पैदा हो सकती है। पीएम 2.5 श्वसन प्रणाली में गहराई तक प्रवेश कर सकता है और सांस संबंधी समस्याओं को जन्म देता है। यह स्वास्थ्य को एक बड़ा खतरा है और वायु प्रदूषण का एक प्रमुख कारक है।

पालमपुर में फूटा हिंदू संगठनों का गुस्सा

पालमपुर (कांगड़ा)। उपमंडल पालमपुर में मस्जिदों में अवैध निर्माण और विशेष समुदाय के लोगों की बढ़ रही तादाद को देख शनिवार को हिंदू संगठनों के आह्वान पर लोगों ने शहर में विरोध-प्रदर्शन किया और रैली निकाली। इस दौरान जय श्री राम के नारे भी लगते रहे।

विरोध प्रदर्शन में बाहरी राज्यों से आने वाले विशेष समुदाय के लोगों के खिलाफ लोगों में गुस्सा देखा गया। हिंदू संगठनों के आह्वान पर पालमपुर में आयोजित इस रैली में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

गांधी ग्राउंड से शुरू हुई यह रैली नया बस अड्डे तक जाकर वापस आई। इस बीच किसी अप्रिय घटना को रोकने के लिए पुलिस बल भी रैली के साथ रहा। कोई अनहोनी न हो, इसके लिए पुलिस ने कई जगहों और शहर के बीच मस्जिद के बाहर पहले ही पुलिस बल तैनात कर रखा था। शहर में शांतिपूर्ण तरीके से चल रही रैली मस्जिद के पास पहुंचते ही आक्रोश में तबदील हो गई। इस बीच भीड़ ने मस्जिद की ओर रुख कर लिया, लेकिन वहां पर थाना प्रभारी पालमपुर भूपेंद्र ठाकुर की अगुवाई में तैनात पुलिस ने भीड़ को रोक लिया।

हालांकि, इस बीच पुलिस और लोगों में काफी खींचतान होती रही। इससे गुस्साए लोगों ने मस्जिद के बाहर बने हनुमान मंदिर के पास सड़क पर बैठकर हनुमान चालीसा पढ़ना शुरू कर दिया। बाद में रैली ने नए बस अड्डे का रुख किया। इस बीच कई जगहों पर विशेष समुदाय के लोगों की दुकानों को देख गुस्सा भी उबलता रहा, जबकि कई जगहों पर विशेष समुदाय के लोगों को देख लोग बेकाबू होते भी देखे गए, लेकिन पुलिस ने हर स्थिति को काबू किया। आकाश दीप जरियाल, गोपेश भृगु, राकेश कुमार ने कहा कि इलाके में बड़ी संख्या में मस्जिदें बन रही हैं। जिसे रोकने वाला कोई नहीं है और न ही इसका किसी का पास इनका रिकार्ड है कि यह विशेष समुदाय के लोग कितने संख्या में पालमपुर पहुंच गए हैं।

राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने जारी की रिपोर्ट

मानकों से नीचे गिरी कई नदियों की जल गुणवत्ता

शिमला(जीकेबी)। हिमाचल प्रदेश में नदियों में जल गुणवत्ता कई स्थानों पर राष्ट्रीय मानकों से नीचे गिर चुकी है। इसका खुलासा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की ओर से जारी वार्षिक रिपोर्ट में हुआ है।

रिपोर्ट के अनुसार, ब्यास, सतलुज, यमुना, गिरी, सिरसा और अन्य नदियों में जल गुणवत्ता कई स्थानों पर राष्ट्रीय मानकों से नीचे गिर चुकी है। इस वार्षिक रिपोर्ट में प्रदेश की प्रमुख नदियों में बढ़ते जल प्रदूषण की गंभीर स्थिति सामने आई है। प्रदेश में प्रतिदिन लगभग 210.5 मिलियन लीटर प्रदूषित पानी उत्पन्न हो रहा है। सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट्स की क्षमता मात्र 119.5 मिलियन लीटर प्रतिदिन है। इसमें से भी केवल 80.8 मिलियन लीटर का ही सही ढंग से निदान हो पा रहा है। करीब 129.7 मिलियन लीटर गंदा पानी प्रतिदिन बिना शोधन के नदियों में बहाया जा रहा है। प्रदूषण के मुख्य कारणों में शहर और औद्योगिक क्षेत्रों से निकलने वाला गंदा पानी, आंशिक रूप से शुद्ध किया गया सीवरेज और कृषि से निकलने वाला रासायनिक कचरा शामिल है।

ब्यास नदी में लगातार गिर रही गुणवत्ता

रिपोर्ट कहती है कि ब्यास नदी की जल गुणवत्ता में लगातार गिरावट आ रही है। मनाली के ऊपर की ओर स्थित हिस्सों में पानी की गुणवत्ता अपेक्षाकृत ठीक पाई गई है लेकिन मनाली के नीचे के हिस्सों में यह बेहद खराब हो चुकी है। यहां की जल गुणवत्ता को सी श्रेणी में रखा गया है। नदी में कोलीफॉर्म बैक्टीरिया की मात्रा खतरे के स्तर से अधिक पाई गई है। यह बैक्टीरिया मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

सिरसा नदी की स्थिति चिंताजनक

बद्दी और कालाअंब से निकलने वाले अपशिष्ट से सिरसा नदी की स्थिति अत्यधिक चिंताजनक है। सिरसा नदी के कई हिस्सों में बायोलॉजिकल ऑक्सीजन डिमांड का स्तर राष्ट्रीय मानकों से कई गुना अधिक पाया गया। सिरसा नदी में बीओडी का स्तर अधिक होने के कारण पानी में घुली ऑक्सीजन की मात्रा खतरनाक रूप से कम हो गई है, जिससे जलीय जीवों के लिए यह स्थिति घातक हो सकती है।

गिरी, अश्विनी खड्ड में भी प्रदूषण गंभीर

गिरी और अश्विनी खड्ड जैसी छोटी नदियों में भी जल प्रदूषण की समस्या गंभीर होती जा रही है। जारी रिपोर्ट में अश्विनी खड्ड के पानी को गंभीर रूप से प्रदूषित बताया गया, विशेषकर उस स्थान पर जहां शहरी नालों का गंदा पानी नदी में मिलता है। इस नदी के पानी में बायोलॉजिकल ऑक्सीजन डिमांड और कोलीफॉर्म बैक्टीरिया की मात्रा मानकों से कई गुना अधिक पाई गई, जिससे इसे ह्यसीह्ल श्रेणी में रखा गया है, जो जल की अत्यधिक खराब गुणवत्ता को दशार्ता है। प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के सदस्य/सचिव अनिल जोशी के अनुसार, नदियों में जल गुणवत्ता की विस्तृत जांचोपरान्त तैयार की गई इस रिपोर्ट जल की गुणवत्ता का आकलन राज्य के विभिन्न हिस्सों में चयनित 243 स्थानों पर किया गया। इसमें 191 नदी जल, 52 भूजल और अन्य जल स्त्रोत शामिल हैं। ये नमूने मासिक आधार पर लिए गए और विभिन्न मानकों पर जांच की गई है।

पिंजरे में कैद हुआ आतंकी पैंथर

जयपुर( )। विराटनगर और इसके आसपास के इलाकों में आतंक का पर्याय बन चुके पैंथर को वन विभाग की टीम ने पकड़ लिया, पिछले कई दिनों से यह पैंथर मवेशियों पर हमला कर रहा था। ग्रामीणों की मांग पर वन विभाग ने यहां कई जगह पिंजरे लगाए थे, जिनमें से विगत दिनों शनिवार की रात्रि एक में वह कैद हो गया। वन विभाग की टीम ने मेडिकल परीक्षण करने के बाद उसे बिलवाड़ी के जंगलों में रिलीज कर दिया।

राजस्थान में शहरी और ग्रामीण आबादी पर लगातार पैंथर के हमले बढ़ रहे हैं। पिछले कई दिनों से विराटनगर और इसके आसपास के इलाकों में पालतू मवेशियों का शिकार कर रहे पैंथर को आखिर वनकर्मियों की टीम पकड़ने में सफल रही। सकतपुरा गांव में लगाए गए पिंजरे में पैंथर कल रात को कैद हो गया। वन विभाग ने पैंथर का मेडिकल परीक्षण कर उसे बिलवाड़ी के जंगलों में रिलीज कर दिया है। ध्यातव्य है कि राजस्थान में तेंदुओं की तेजी से बढ़ती तादाद ने इंसानी आबादी से लिए बड़ा खतरा पैदा कर दिया है। पिछले 5 महीनों में यहां तेंदुओं के हमले में 6 लोगों की जान जा चुकी है। इसी के मद्देनजर वन विभाग ने नेशनल वाइल्ड लाइफ बोर्ड को चिट्ठी लिखकर मार्गदर्शन मांगा है। मामले से जुड़े वन विभाग के अधिकारी ने बताया कि फिलहाल उनके पास ऐसे मामलों में पैंथर को पकड़कर फिर से जंगल में छोड़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

घूँघट की बगावत

15 सितम्बर 2024

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित
हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

8

शबाना आजमी और जया बच्चन एफटीआई की छात्रा

दिग्गज अभिनेत्री शबाना आजमी ने एक बार दावा किया था कि अभिनेत्री-राजनेता जया बच्चन ने उन्हें फिल्मों में काम करने के लिए प्रेरित किया। कुछ साल पहले बच्चन को उनके जन्मदिन पर बधाई देते हुए, आजमी ने एक एक्स पोस्ट शेयर किया था, जिसमें उन्होंने कहा था कि उन्हें जया बच्चन को फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया की शॉर्ट फि ल्म सुमन में देखने के बाद फिल्मों में काम करने की प्रेरणा मिली। शबाना ने अपनी पिछली फि ल्मों में से एक से अभिनेत्री की एक तस्वीर शेयर की। शबाना आजमी ने लिखा, सालगिरह मुबारक (हैप्पी बर्थडे) जया बच्चन। मैं एफटीआई की फि ल्म 'सुमन' की वजह से फि ल्मों में शामिल हुई, जिसमें आपने बहुत ही ताजगी के साथ मुख्य भूमिका निभाई थी। शबाना आजमी और जया बच्चन दोनों ही [illegible]की पूर्व छात्रा हैं। जिन्हें नहीं पता, उन्हें बता दें कि सुमन 1970 के दशक में बनी थी। 15 मिनट की यह शॉर्ट फि ल्म एक किशोर गाँव की लड़की की कहानी और उसके परिपक्व युवा महिला में बदलने के इर्द-गिर्द घूमती है। जया बच्चन और शबाना आजमी दोनों को आखिरी बार करण जौहर की पारिवारिक मनोरंजक फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी में देखा गया था। आजमी के पास मनीष मल्होत्रा की बन टिक्की भी है, जिसमें जीनत अमान और अभय देओल भी हैं।

नहीं चला करीना का जादू

आजकल सिनेमाघर अपने थ्रोबैक वाले समय में चल रहे हैं। पिछले कुछ महीनों में सिनेमाघरों में लैला-मजनूं और वीर जारा जैसी कई पुरानी क्लासिक फिल्में रिलीज हुई है और इन्हें काफी अच्छा रिस्पॉन्स भी मिला है। अब इस रेस में लव स्टोरी के बाद हॉरर फिल्मों की रि-रिलीज का दौर लगता है शुरू हो रहा है। अमेजन प्राइम वीडियो पर 2018 में रिलीज हुई फिल्म तुम्बाड को काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिला था। दर्शकों की पसंदीदा फिल्म में बनकर उभरी थी तुम्बाड। अब ऐसे में 6 साल बाद फिल्म को सिनेमाघर में पॉलिश करके रि-रिलीज किया जा रहा है। ऐसे में इस क्लासिक और सुपरहिट फिल्म को देखने के लिए काफी ज्यादा लोगों ने दिलचस्पी दिखाई है। तुम्बाड का सामना बॉक्स ऑफिस पर करीना कपूर की फिल्म द बकिंघम मर्डर्स से हो रहा है। द बकिंघम मर्डर्स एकदम फ्रेश मूवी है जो एक मर्डर मिस्ट्री है लेकिन करीना की द बकिंघम मर्डर्स, को दूसरी बार सिनेमाघरों में रिलीज हुई तुम्बाड ने पछाड़ दिया है।

द बकिंघम मर्डर्स के क्लाइमेक्स ने बिगाड़ा खेल

आपको बता दें कि फिल्म द बकिंघम मर्डर्स को अच्छी प्रतिक्रिया मिली है। फिल्म की कहानी और करानी कपूर के किरदार को पसंद किया जा रहा है। फिल्म को लेकर यह भी कहा जा रहा है कि फिल्म का जो क्लाइमेक्स है वह और भी धांसू हो सकता था लेकिन पूरी फिल्म ने दर्शकों को अपनी सीट पर बांध कर रखा। ऐसे में फिल्म चार स्टार पाने का दम रखती थी लेकिन कमजोर क्लाइमेक्स ने था करीना कपूर का साथ नहीं दिया। अगर वह अधिक शक्तिशाली होता तो फिल्म बिना किसी संदेह के चार स्टार की हकदार होती।

खुल्लम-खुल्ला प्यार करेंगे हम दोनों

टेलर स्विफ्ट को अपने बॉयफ्रेंड ट्रैविस केल्से के साथ यूएस ओपन पुरुष फाइनल मैच का आनंद लेते देखा गया। इस दौरान दोनों जोश से 'आई बिलीव इन ए थिंग कॉल्ड लव' गाते नजर आए। साथ ही दोनों को एक दूसरे को किस करते और ड्रिंक्स पीते हुए भी देखा गया।

अजय देवगन और वाणी कपूर की फिल्म रेड 2 फरवरी 2025 में होगी रिलीज

वर्ष 2018 में रेड के साथ दर्शकों का दिल जीतने के बाद, अजय देवगन आईआरएस अधिकारी, अमय पटनायक (अजय देवगन) के रूप में वापसी करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। राजकुमार गुप्ता द्वारा निर्देशित और भूषण कुमार, कुमार मंगत पाठक, अभिषेक पाठक और कृष्ण कुमार द्वारा निर्मित, रेड 2, अगले साथ 21 फरवरी 2025 को रिलीज होगी।

अजय देवगन के साथ, फिल्म में वाणी कपूर मुख्य भूमिका में हैं, रितेश देशमुख खलनायक की भूमिका में हैं, और रजत कपूर महत्वपूर्ण भूमिका में हैं। दिल्ली और लखनऊ में बड़े पैमाने पर शूट की गई, रेड 2 एक और एड्रेनालाईन से भरी सवारी का वादा करती है। निमार्ताओं ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट के साथ रिलीज की तारीख की घोषणा की।

पहला भाग 1980 के दशक में सरदार इंदर सिंह पर आयकर विभाग के अधिकारियों द्वारा की गई वास्तविक जीवन की आयकर छापेमारी पर आधारित था, जो भारतीय इतिहास में सबसे लंबी छापेमारी थी, जो तीन दिन और दो रात तक चली थी। रेड 2 का निर्माण भूषण कुमार, कुमार मंगत पाठक, अभिषेक पाठक और कृष्ण कुमार ने किया है। फिल्म को गुलशन कुमार और टी-सीरीज ने प्रस्तुत किया है और यह पैनोरमा स्टूडियोज का प्रोडक्शन है। फिल्म को पहले इस साल 15 नवंबर को रिलीज किया जाना था। अब इसे 21 फरवरी, 2025 तक के लिए टाल दिया गया है।

कार्डी बी ने साझा की बच्चे की तस्वीर

कार्डी ने गत 7 सितंबर को एक बेटी को जन्म दिया था। हालांकि, तस्वीरें उन्होंने 12 सितंबर को साझा कीं। तस्वीरों में, स्टार सिंगर अपनी बेटी को गोद में उठाकर मुस्कुराती हुई नजर आ रही हैं। बता दें, तस्वीरों में कार्डी के पूर्व पति ऑफसेट भी नजर आ रहे हैं और उनके साथ दोनों बच्चे भी हैं।

स्वास्थ्य समस्याओं के कारण मैं माँ नहीं बन सकती : सेलेना गोमेज

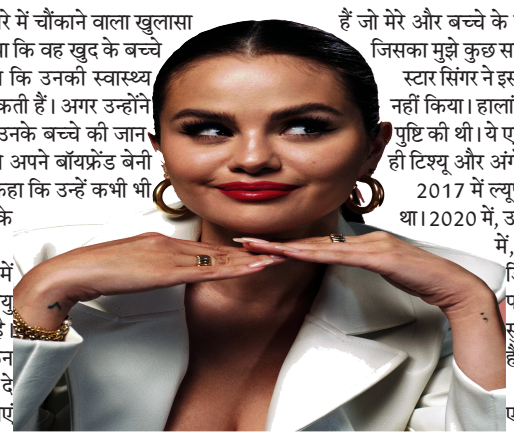

हॉलीवुड स्टार सेलेना गोमेज ने अपने बारे में चौंकाने वाला खुलासा किया है। अभिनेत्री ने वैनिटी फेयर को बताया कि वह खुद के बच्चे पैदा नहीं कर सकती है। सेलेना ने बताया कि उनकी स्वास्थ्य समस्याओं की वजह से वह मां नहीं बन सकती हैं। अगर उन्होंने ऐसा करने की कोशिश की तो उनकी और उनके बच्चे की जान को खतरा होगा। इसके अलावा अभिनेत्री ने अपने बॉयफ्रेंड बेनी ब्लैंको के बारे में भी बातचीत की। उन्होंने कहा कि उन्हें कभी भी उस तरह से प्यार नहीं मिला जैसा ब्लैंको के साथ रिश्ते में रहकर मिला हैं।

वैनिटी फेयर के साथ एक इंटरव्यू में अभिनेत्री ने कहा कि उन्होंने 35 वर्ष की आयु तक परिवार शुरू करने की योजना बनाई है। उन्होंने कहा, 'मैंने यह कभी नहीं कहा, लेकिन दुर्भाग्य से मैं अपने बच्चों को जन्म नहीं दे सकती। मेरे पास बहुत सी चिकित्सा समस्याएं हैं जो मेरे और बच्चे के जीवन को खतरे में डाल देंगी। यह कुछ ऐसा था जिसका मुझे कुछ समय तक शोक करना पड़ा।'

स्टार सिंगर ने इस इंटरव्यू में अपनी स्वास्थ्य समस्याओं का खुलासा नहीं किया। हालांकि, 2015 में उन्होंने ल्यूपस से पीड़ित होने की पुष्टि की थी। ये एक ऐसी बीमारी है, जिसमें प्रतिरक्षा प्रणाली अपने ही टिश्यू और अंगों पर हमला करती है।

2017 में ल्यूपस के कारण गोमेज का किडनी ट्रांसप्लांट हुआ था। 2020 में, उन्हें बाइपोलर डिसऑर्डर का पता चला था। 2022 में, उन्होंने रोलिंग स्टोन को बताया कि बाइपोलर डिसऑर्डर के लिए ली जाने वाली दो विशेष दवाओं पर बने रहने की आवश्यकता के कारण उन्हें सुरक्षित गर्भधारण करने में असमर्थ होना पड़ सकता है।

उन्होंने उस समय कहा था कि यह मेरे जीवन में एक बहुत बड़ी, बड़ी, वर्तमान चीज है।

लोक गायक मांगे खान का 49 वर्ष की आयु में निधन

अमरस रिकॉर्ड्स के बैंड बाड़मेर बॉयज के प्रमुख गायक के रूप में अपनी भावपूर्ण आवाज के लिए जाने जाने वाले प्रसिद्ध राजस्थानी लोक गायक मांगे खान का बुधवार को निधन हो गया। वे 49 वर्ष के थे। मांगे खान हृदय रोग से पीड़ित थे और हाल ही में उनकी बाईपास सर्जरी हुई थी। संगीतकार के परिवार में उनकी पत्नी और तीन बच्चे हैं। साथी बैंड सदस्यों सवाई खान और मगदा खान के साथ 'बोले तो मिठो लागे', 'अमरानो', 'राणाजी' और 'पीर जलानी' जैसे गीतों के लिए जाने जाने वाले खान ने देश के विभिन्न हिस्सों और डेनमार्क, यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी, स्विट्जरलैंड और इटली जैसे कई देशों में प्रदर्शन किया था।

अमरास रिकॉर्ड्स के संस्थापक आशुतोष शर्मा ने कहा, ₹मैंगी के जाने से एक ऐसा शून्य पैदा हो गया है जिसे भरा नहीं जा सकता। वह एक प्रिय मित्र और एक अद्भुत आत्मा थे, जिनकी आवाज असाधारण थी। इतनी कम उम्र में उनका दुखद निधन न केवल उनके परिवार और हमारे लिए बल्कि संगीत जगत के लिए भी एक बहुत बड़ी क्षति है। एक ऐसी आवाज जिसे कभी नहीं बदला जा सकता।₹ शर्मा ने कहा कि उन्होंने अस्पताल जाते समय बात की और गायक ने उनसे कहा, तबियत-जोरदार, मिलते हैं ऑपरेशन के बाद।

शर्मा के अनुसार, उनकी खान से मुलाकात 2010 में हुई थी, जब वह राजस्थान के बाड़मेर में रामसर गांव में रुक्मा बाई की रिकॉर्डिंग करने गए थे, जो सार्वजनिक रूप से प्रदर्शन करने वाली पहली महिला मांगणियार गायिका थीं। खान उनके पड़ोसी थे और हारमोनियम पर उनके साथ थे। बाई के गीतों की रिकॉर्डिंग समाप्त करने के बाद, खान ने भी उनके गीतों को रिकॉर्ड करने की इच्छा व्यक्त की। हम उनकी आवाज और गायन शैली से अभिभूत थे।

शर्मा ने कहा, उस शाम हमने मंगा के साथ अपने पहले दो गाने रिकॉर्ड किए - 'छल्ला छल्ला' और 'पीर जलानी', जिसे कोक स्टूडियो ने फिर से तैयार किया। बाड़मेर बॉयज ने 2011 में दिल्ली के सिरी फोर्ट में एक प्रदर्शन के साथ शुरूआत की और बाकी, जैसा कि वे कहते हैं, इतिहास है। वे मंगनियार संगीत के वैश्विक राजदूत बन गए, जो राजस्थानी लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत परंपराओं के साथ सूफीवाद के तत्वों को जोड़ता है।

दिलो दिमाग को झकझोरने वाली फिल्म 'सेक्टर 36'

मैडॉक फिल्म्स की नई पेशकश उनकी पहली की गई रिलीज की गई फिल्मो के काफी अलग हैं, फिल्म की कहानी सत्य घटनाओं पर आधारित हैं, फिल्म काफी डार्क और सस्पेंस से भरी हैं, जो आपके दिल और दिमाग को झंझोर के रख देगी, ये हमारे समाज और समय के हिसाब से एक बहुत जरूरी फिल्म है, जो समझ की डरावनी सच्चाई से रूबरू करवाती हैं, जिसे हम शायद नकारना चाहते है.(

फिल्म 2006 के नोएडा सीरियल मर्डर्स, जिन्हें निठारी किलिंग्स के नाम से भी जानते हैं, से प्रेरित है।इसमें विक्रांत मैसी ने एक अमीर परिवार के घरेलू नौकर की भूमिका निभाते दिखाई देंगे, और इस परिवार में रहस्य की कोई कमी नहीं हैं। उसका किरदार, जो निर्दयता और क्रूरता से भरा हुआ है, बिना किसी पछतावे के बच्चों का अपहरण और हत्या करता है। उसका अतीत, जो पीड़ा और दुख से भरा हुआ है, उसे एक ऐसा हत्यारा बना देता है।

विक्रांत के मालिक, अक्षय खुराना, जो एक प्रभावशाली और अमीर व्यक्ति की भूमिका में हैं, उनका बच्चों के साथ दुराचार करना उनकी आदत या लत हैं, जो उसे अपने घर में हो रहे भयानक अपराधों में एक भागीदार बना देता है। दोनों मिलकर यह घिनौने काम करते रहते हैं।

दीपक डोबरियाल ने इंस्पेक्टर राम चरण पांडे की भूमिका निभाई है। शुरू में, पांडे लापता बच्चों के मामलों को बस सांख्यिकीय आंकड़े मानता हैं।उसको बच्चो के गायब होने से परवाह नहीं पड़ता। लेकिन जब उसकी अपनी बेटी संभावित शिकार के रूप में सामने आती है, तो वह अपनी गलती का एहसास करता है और उसके बाद इस केस की जड़ तक जाने का फैसला लेता है।

फिल्म में कलाकारों की शानदार परफॉर्मेंस ने इसे और भी प्रभावशाली बना दिया है। मुख्य भूमिकाओं में विक्रांत मैसी और दीपक डोबरियाल ने अपने अभिनय से दर्शकों को प्रभावित किया है।

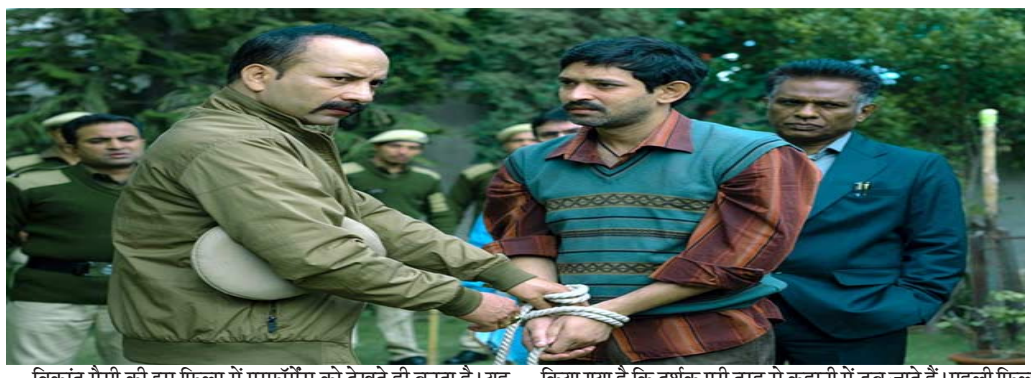

विक्रांत मैसी की इस फिल्म में परफॉर्मेंस को देखते ही बनता है। यह उनकी अब तक की सबसे अनोखी और अप्रत्याशित भूमिका है, जिसे दर्शकों ने पहले कभी नहीं देखा। उनके किरदार की गहराई और जटिलता को निभाते हुए मैसी ने अपने अभिनय कौशल की एक नई मिसाल कायम की है। उनकी क्रूरता और निर्दयता दर्शकों को चौंका देने वाली है और यह भूमिका उनके करियर के बेहतरीन प्रदर्शनों में से एक साबित होती है। साथ ही, दीपक डोबरियाल ने भी अपने करियर की सबसे प्रभावशाली परफॉर्मेंस दी है। इंस्पेक्टर राम चरण पांडे के रूप में उनका अभिनय अत्यंत प्रभावशाली है। फिल्म के निर्देशक ने कहानी को जिस कुशलता से पर्दे पर उतारा है, वह सराहनीय है। आदित्य निम्बालकर ने हर दृश्य को इतनी बारीकी से तैयार किया है कि दर्शक हर पल तनाव और सस्पेंस का अनुभव करते हैं। निर्देशन की सशक्तता फिल्म के हर पहलू में दिखाई देती है झ चाहे वह सिनेमेटोग्राफी हो या संपादन । फिल्म का निर्देशन इस तरह से किया गया है कि दर्शक पूरी तरह से कहानी में डूब जाते हैं। पहली फिल्म में ऐसा काम दिखाने के लिए आदित्य को ढेरों बधाई।

मैडॉक फिल्म्स, जो भारतीय सिनेमा में अपनी विविधता और गुणवत्ता के लिए मशहूर है, ने 'सेक्टर 36' के साथ एक और बेहतरीन प्रोजेक्ट पेश किया है। उनकी फिल्म निर्माण की खासियत यह है कि वे न केवल मनोरंजन प्रदान करते हैं, बल्कि एक नया दृष्टिकोण और नया अनुभव भी देते हैं। 'सेक्टर 36' के माध्यम से मैडॉक फिल्म्स ने एक बार फिर दर्शकों को सिनेमाई उत्कृष्टता का अनुभव कराया है। मैडॉक फिल्म्स और जियो स्टूडियोज के बैनर तले दिनेश विजन और ज्योति देशपांडे द्वारा निर्मित , 'सेक्टर 36' एक ऐसी फिल्म है जिसे देखने के लिए दर्शकों को समय निकालना चाहिए। अगर आप एक थ्रिलर फिल्म के शौकीन हैं जो आपको हर पल सस्पेंस और रोमांच में बनाए रखे, तो 'सेक्टर 36' आपकी सूची में जरूर होनी चाहिए।

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकज धर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45, बादशाह बाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित।

संपादक: पंकज धर द्विवेदी

संपर्क सूत्र : ghoonghatkibagawat37@gmail.com